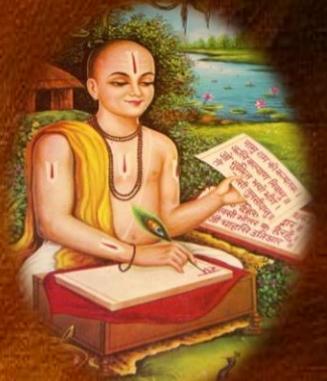
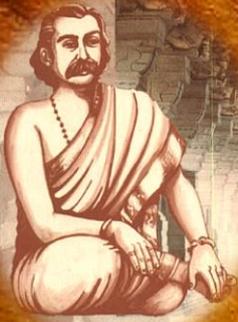




# தகவரிண் துர்பண் दक्षिण दर्पण DAKSHIN DARPAN

அங்க : 4

வர்ப் : 2020



माल और सेवा कर एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क तमिलनाडु एवं पुदुच्चेरी अंचल

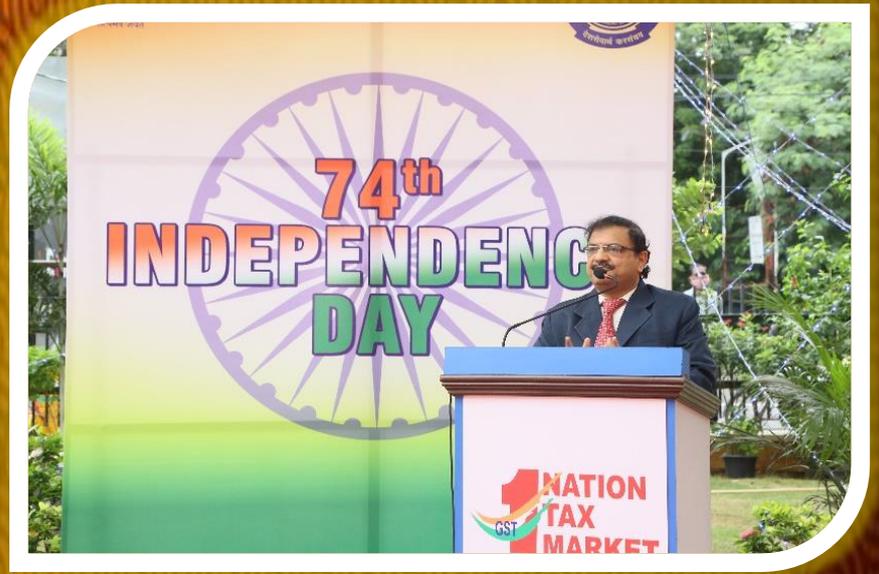
**GST AND CENTRAL EXCISE TAMILNADU AND PUDUCHERRY ZONE**

# प्रधान मुख्य आयुक्त कार्यालय, चेन्नई



स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020 के दौरान  
परेड का निरीक्षण करते हुए  
श्री जी. वी. कृष्णा राव, मुख्य आयुक्त ।

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020 के अवसर पर  
सभा को संबोधित करते हुए  
श्री जी. वी. कृष्णा राव, मुख्य आयुक्त ।



स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020 में  
उपस्थित अधिकारीगण ।

தகூழிண் தூர்பண்  
दक्षिण दर्पण

**DAKSHIN DARPAN**

அங்க : 4

வர்ப : 2020



माल और सेवा कर एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क  
தமில்நாடு எவ் பூடுச்சேரி அங்கல

**GST & CENTRAL EXCISE  
TAMILNADU & PUDUCHERRY ZONE**

# தகஷிண் துர்பண்

## दक्षिण दर्पण

### DAKSHIN DARPAN

அங்க : 4

வர்ப : 2020

माल और सेवा कर एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क प्रधान मुख्य आयुक्त का कार्यालय  
तमिलनाडु एवं पुदुच्चेरी की विभागीय पत्रिका

#### प्रधान संपादक

श्री जी. वी. कृष्णा राव  
मुख्य आयुक्त , तमिलनाडु एवं पुदुच्चेरी अंचल

#### संपादक मंडल

श्री राजेश सोढी  
प्रधान आयुक्त, कोयंबतूर आयुक्तालय  
श्री के. एम. रविचन्द्रन  
आयुक्त , चेन्नई दक्षिण आयुक्तालय एवं चेन्नई लेखा परीक्षा – II ( अतिरिक्त प्रभार )

श्री जी. रवीन्द्रनाथ  
आयुक्त , चेन्नई आउटर आयुक्तालय एवं पुदुच्चेरी आयुक्तालय ( अतिरिक्त प्रभार )

श्री जे.एम. केन्डी  
आयुक्त, तिरुच्चि आयुक्तालय एवं चेन्नई उत्तर आयुक्तालय ( अतिरिक्त प्रभार )

श्री के. शिवकुमार  
आयुक्त , मदुरै आयुक्तालय

श्रीमती ए. एस. मीनालोचनी  
आयुक्त, सेलम आयुक्तालय

डॉ. वी. संतोष कुमार  
आयुक्त , चेन्नई लेखा परीक्षा – I आयुक्तालय

श्रीमती मिनु प्रमोद  
आयुक्त , कोयंबतूर लेखा परीक्षा आयुक्तालय

श्री भरत असारसा

आयुक्त , चेन्नई अपीलस - I

श्री पी. आनंद कुमार

आयुक्त , चेन्नई अपीलस - II

श्री एन.जे. कुमरेश

आयुक्त , कोयंबतूर अपीलस आयुक्तालय

### प्रबंध संपादक

श्री बी. सेंदिल वेलवन

अपर आयुक्त, प्रधान मुख्य आयुक्त का कार्यालय

### उप संपादक मंडल

डॉ. वी. वेंकटेश्वरा

उप निदेशक ( रा.भा. ), प्रधान मुख्य आयुक्त का कार्यालय

श्री आर. वासुदेवन

सहायक आयुक्त, प्रधान मुख्य आयुक्त का कार्यालय

श्री के. मुरलीधर

सहायक आयुक्त, प्रधान मुख्य आयुक्त का कार्यालय

### सहयोग

श्री ई. वी. प्रमोद

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, प्रधान मुख्य आयुक्त का कार्यालय

श्री ए. हुसैन शरीफ

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, प्रधान मुख्य आयुक्त का कार्यालय

श्रीमती के. दीपमाला शुक्ला

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, प्रधान मुख्य आयुक्त का कार्यालय

श्रीमती अनिन्दिता बनर्जी

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, प्रधान मुख्य आयुक्त का कार्यालय

इस पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं। इन विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी दूसरे की रचना को अपने नाम से भेजने वाले अधिकारी / कर्मचारी स्वयं इसके लिए उत्तरदायी होंगे।

### मुख्य पृष्ठ :

तमिल एवं हिंदी भाषाओं के मूर्धन्य कवि -

तिरुवल्लुवर, कंबन, सुब्रह्मण्य भारती

एवं

सुभद्रा कुमारी चौहान, तुलसीदास और कबीरदास



# संदेश

हिंदी दिवस के अवसर पर हार्दिक बधाई।

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि माल और सेवा कर एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, तमिलनाडु एवं पुदुच्चेरी अंचल की वार्षिक विभागीय त्रिभाषी पत्रिका 'दक्षिण दर्पण' के चौथे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं और प्रत्येक भाषा का अपना महत्व है। तथापि, भिन्न-भिन्न भाषाई लोगों के बीच में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी भाषा की अलग पहचान है। हिंदी की सर्वस्वीकार्यता के आलोक में संविधान ने इसे भारत की राजभाषा की मान्यता दी है। यह हर्ष की बात है कि सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयाग दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, कंप्यूटर ने इसे गति प्रदान की है।

कोविड – 19 महामारी के प्रकोप ने हमारी कार्यशैली को एकाएक बदल दिया है। अब अधिकांश कार्य ऑनलाइन किया जा रहा है। साथ ही, विभाग में ई – कार्यालय प्रणाली प्रवृत्त हो गई है। नई कार्यशैली को अपनाने में हमारे अंचल के अधिकारियों और कर्मचारियों ने चुस्ती दिखाई है, जो सराहनीय है। बदले हुए परिवेश के अनुरूप दक्षिण दर्पण का यह अंक ई – पत्रिका के रूप में प्रस्तुत हो रहा है। मुझे विश्वास है कि पिछले अंकों की भांति पत्रिका का वर्तमान अंक भी पाठकों को रुचिकर और उपयोगी सिद्ध होगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले रचनाकार और अन्य अधिकारी साधुवाद के पात्र हैं।

आप सभी से मेरा अनुरोध है कि कर संचय के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन में भी भरपूर सहयोग प्रदान करते रहें। कोविड – 19 के परिप्रेक्ष्य में केन्द्र सरकार द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों का पालन कर सुरक्षित और स्वस्थ रहें।

जी वी कृष्णाराव

(जी. वी. कृष्णा राव)

मुख्य आयुक्त

माल और सेवा कर एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क

तमिलनाडु एवं पुदुच्चेरी अंचल

## हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

(भारत के संविधान का अनुच्छेद 351)

### Directive for development of the Hindi language

It shall be the duty of the Union to promote the spread of the Hindi language to develop it so that it may serve as a medium of expression for all the elements of the composite culture of India and to secure its enrichment by assimilating without interfering with its genius, the forms, style and expressions used in Hindustani and in the other languages of India specified in the Eighth Schedule, and by drawing, wherever necessary or desirable, for its vocabulary, primarily on Sanskrit and secondarily on other languages.

(Article 351, Constitution of India)

# इस अंक में...

क्रम. सं.	विषय	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं.
1	आमना - सामना	श्रुति सुमन	9
2.	भूमि संसाधन संरक्षण में मृदा की भूमिका	मेघा धाकड़	12
3.	लॉकडाउन में अपने अनुभव	शेखर सुमन	14
4.	मुंशी प्रेमचंद	किरन देवी	17
5.	भष्टाचार मुक्त समाज	राहुल	19
6.	सब अच्छा हुआ	प्रेम कुमार	21
7.	मील का पत्थर	पीयूष तिवारी	22
8.	इंसान बदल जाते हैं, मोहब्बत नहीं बदलती	पंकज	23
9.	महाकवि तुलसीदास	वी. अन्नपूर्णा	24
10.	कैद	प्रवेश कुमार	26
11.	मजदूर हैं हम	बिन्टू राम जाट	27
12.	प्रेममय व्यवहार	कृष्ण राज सिंह यादव	28
13.	खुश हूँ	शोभनाथ	30
14.	पिता	आकांक्षा मिश्रा	31
15.	महिला सशक्तिकरण	सी. एम. हर्षवर्धिनी	33
16.	रक्षाबंधन	पुष्पेंद्र सिंह धाकड़	34
17.	तन्हाई	एस. पाठक	35
18.	प्यारी साइकिल	आदित्य शुक्ला	36
19.	महामारी	अनुभव प्रसाद	37
20.	माँ तू सब जानती है	बिनीत कुमार गुप्ता	38
21.	साहित्य और समाज	सुधांशु कुमार	39
22.	डिप्रेशन का मज़ाक	अमृता कुमारी	40

# इस अंक में...

क्रम. सं.	विषय	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं.
23.	प्रकृति	अंजली कुमारी	41
24.	बाज के बच्चे	देवोत्तम कुमार त्रिवेदी	42
25.	काल की पुकार	के. सरण्या	44
26.	मानसिक स्वास्थ्य	आर. शांता	45
27.	मेरी माँ	एस. कीर्तना	46
28.	कोरोना वायरस और लॉकडाउन	वी. काव्यश्री	47
29.	ज़िंदगी का खेल	एस. पवित्रा	49
30.	बस थोड़ा सा	अनिन्दिता बनर्जी	51
31.	CBIC's Restoration of 184 year Old French Light House at Puducherry	R. Devanathan	67
32.	Women Freedom Fighters of India	N. Deepika	69
33.	Hate to be loved	K. Thiruvengkatalakshmi	75
34.	Understand the feelings of others	M. Vaishnavi	76
35.	MSD- The name and title in one	Priyadharshini Madhavan	77
36.	I am mutable	Padmapriya V.	79
37.	Ambiguity	Aaditya	80
38.	Remembering the inimitable Tunesmith	E. V. Pramod	81
39.	ஜிஎஸ்டி சட்ட மற்றும் நடைமுறையில் எதிர்கொண்ட சில சிக்கல்கள் மற்றும் அதற்கான தீர்வுகள்:	ம. சுப்ரமணியம்	84
40.	கட்டுப்படு	து.வசந்தி	89
41.	வேண்டும் - வேண்டேன்	து. கிருஷ்ணமூர்த்தி	90
42.	நம்பிக்கையே மனிதனின் பலம்	ஆர் வாசுதேவன்	91

# आमना-सामना

“वो खुद को क्या समझती है। जब देखो मुझ पर हुक्म चलाती रहती है। कभी मम्मी से डाँट खिलाती है तो कभी पापा से। आज तो मैं इसे सबक सिखाकर रहूँगा।” पवन मन ही मन बुदबुदाया और फिर कुछ सोचते हुए नीचे पायल के कमरे के पास पहुँचा। पायल बस कमरे के अंदर पहुँची ही थी कि पवन के दरवाजा लॉक करने की आवाज आई। इससे पहले कि पायल कुछ कर पाती पवन उसे कमरे में बंद कर चुका था।

“पवन! दरवाजा खोलते हो कि नहीं, लगता है डाँट सुनकर पेट नहीं भरा तुम्हारा। दरवाजा खोलो” पायल दरवाजा खटखटाते हुए और पवन पर गुस्सा करते हुए बोली। पर पवन कहाँ तो उसकी सुनने वाला था। “कुछ देर तुम अपने प्यारे कमरे का मजा लो और मुझे छुटकारा दो।” यह कहकर पवन ऊपर वाले फ्लोर पर स्थित अपने रूम में चला गया। पायल को सबक सिखाने के अपने प्लान में वो कामयाब हो चुका था।

इधर पायल समझ चुकी थी कि बिना मम्मी के बोले पवन दरवाजा नहीं खोलने वाला है। सो उसने सोचा कि क्यों न वो थोड़ी देर पढ़ाई कर ले। ऐसे भी परीक्षा नजदीक थी। ये सोचकर वो जैसे ही सामने अपने टेबल की तरफ बढ़ी, उसे अपने छोटे से टेबल कैलेंडर के पीछे से झाँकते हुए एक आकृति दिखाई दी। उसकी आँखें देखकर मानो उसके रोंगटे खड़े हो गए। अचानक से उसे तेज पसीना चलने लगा। कुछ देर के लिए वह बिल्कुल सन्न रह गई। ऐसा लग रहा था मानो उसके दिल-दिमाग ने डर के माने सोचना बंद कर दिया हो। वह तुरंत पीछे मुड़ी और जोर-जोर से चिल्लाने लगी। पर कहाँ कोई उसे सुनने वाला था। पवन तो उसे कमरे में बंद कर हेडफोन पर गाना सुन रहा था और माँ रूम में टी.वी. देख रही थी जहाँ उसकी आवाज पहुँच नहीं सकती थी।

पायल ने एक पल को सोचा कि शायद उसे भ्रम हुआ हो और साहस बटोरते हुए एक बार फिर उसने टेबल कैलेंडर के पीछे देखा और चीख पड़ी “हाँ ! वो यहीं है।” उसकी वो काली-काली आँखें मानो उसके अंदर का पूरा खून चूस रही हो। धीरे-धीरे वो आकृति थोड़ा



बाहर आयी तो उसके कोयले सा काला शरीर भी पायल को दिखने लगा । यह आकृति और किसी की नहीं बल्कि बिल्ली की थी जिसका बस नाम सुन वह डर से उछलने लगती थी । आज वही बिल्ली ठीक उसके सामने एक बंद कमरे में उसके साथ थी । यूँ तो पायल बहुत बहादुर थी । हमेशा से एडवेंचर एक्टिविटी में आगे रहती थी । किसी से नहीं डरती थी । पर एक बिल्ली ही थी जिसका जिक्र भी उसे अंदर तक कँपा देता था । अभी उसे ऐसा लग रहा था मानो वह कोई डरवाना सपना देख रही हो और बस इतना चाह रही थी कि कोई उसे जगा दे । पर आज शायद वह सपना उसके लिए हकीकत बन चुका था जिसका सामना उसे अकेले ही करना था । अभी अगर दरवाजा खुला होता तो वह दौड़कर अपनी मम्मी के पास चली जाती और तीन-चार घंटों तक अपने कमरे में नहीं जाती । पर अब वह क्या करे ?

बिल्ली अब कैलेंडर के पीछे से बाहर आ चुकी थी । “ये सब मेरी ही गलती है । दरवाजा अगर पहले ही बंद कर देती तो शायद बिल्ली आती ही नहीं ।” पायल जोर-जोर से रोना चाहती थी पर शायद ऐसा कर वह खुद को और कमजोर कर लेती । पायल अब धीरे-धीरे खुद को सँभालने की कोशिश करने लगी । “एक बिल्ली ही तो है । न जाने मैंने कितने ही मुश्किलों और भयावह चीजों पर जीत हासिल की है । एक बिल्ली मुझे नहीं डरा सकती ।” पायल खुद को समझाने लगी । पर जैसे ही उसकी नजर आगे बढ़ती हुई उस बिल्ली की आँखों पर पड़ी वह फिर से काँप उठी । “नहीं! नहीं पायल तुझे हार नहीं माननी ।” उसने फिर खुद को समझाया ।

उसने एक पल के लिए अपनी आँखें बंद की और उस घटना को याद किया जब उसके माउटेनियरिंग कोच, उसकी एक दोस्त को समझा रहे थे जिसे ऊँचाई से डर लगता था । उन्होंने उससे कहा था, “डर को जीतने का, उससे लड़ने का एकमात्र रास्ता है उसका सामना करना । जब तक डर का सामना नहीं किया, डर डराएगा । लेकिन जिस दिन डर पर पलटवार किया, वह डर खुद इतना डरपोक होता है कि खुद भाग जाएगा ।” “सामना कर पायल! सामना कर पायल । आज खुद के इस डर को दिखा दे कि बिल्ली तो क्या अगर शेर भी सामने होगा तो तू सामना करेगी । घबराएगी नहीं । दो-दो हाथ करेगी और फिर जो होना होगा वह होगा ।” खुद को यह कहते हुए पायल ने आँखें खोलीं । अब उसकी आँखों में डर नहीं बल्कि सामना करने की हिम्मत थी । उसे तलाश थी तो एक हथियार की जो उसे अपनी अलमारी के बगल में रखे

लाठी के रूप में दिखी। उसने बिना देर किए लाठी अपने हाथ में उठा ली और उस बिल्ली को ध्यान से देखने लगी जो टेबल से कूदकर उसकी तरफ बढ़ रही थी।

इधर मां को पायल की इतनी देर से चहक नहीं मिली तो वह पवन के रूम में गई और पायल के बारे में पूछा। “मैंने उसे उसके कमरे में बंद कर दिया है।” पवन ने कहा। “तेरा दिमाग खराब है। भला ऐसा कोई करता है अपनी बड़ी बहन के साथ। चल-चलकर दरवाजा खोल।” मां बोलीं और दोनों पायल के रूम की तरफ बढ़े।

बिल्ली पायल के बिल्कुल करीब आ चुकी थी। पायल डंडा उठाकर बिल्ली को बस मारने ही वाली थी कि तभी उसके रूम का दरवाजा खुला और बिल्ली जल्दी से बाहर भाग गयी।

पायल पसीने से तर-बतर हो चुकी थी। वह तुरंत मां से लिपट गई। पवन और मां ये सोचकर हैरान थे कि पायल इतनी देर बिल्ली के साथ कैसे टिक गई। पर पायल खुश थी कि आखिरकार उसने अपने डर का सामना कर उसे भगा दिया।

श्रुति सुमन  
निरीक्षक

चेन्नई दक्षिण आयुक्तालय



# भूमि संसाधन संरक्षण में मृदा की भूमिका

मिट्टी जीवन-भरण का एक महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि मनुष्य के भोजन का उत्पादन इसी पर निर्भर करता है। अतः कृषि के क्षेत्र में मृदा का महत्वपूर्ण स्थान है। किसी भी देश की सुख-समृद्धि तथा विकास के लिए उस देश की मृदा और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का अच्छा होना आवश्यक है। हमारे देश में एक चिंतनीय विषय बन गया है कि उत्पादक भूमि निरंतर कम हो रही है। भूमि की प्रति व्यक्ति उपलब्धता वर्ष 1950 में 0.48 हेक्टेयर थी जो वर्ष 2019 तक घटकर 0.12 हेक्टेयर हो गई।

यह एक विडम्बना ही है कि एक ओर तो उपजाऊ मिट्टी भू-क्षरण द्वारा नष्ट हो रही है दूसरी ओर हम अपनी आवश्यकता के लिए इसी उपजाऊ कृषि भूमि पर मकान, सड़कें, रेल लाइनें, मनोरंजक स्थल तथा उद्योगीकरण आदि का जाल फैलाकर उपजाऊ भूमि को नष्ट करते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में कृषि योग्य उपजाऊ भूमि निरंतर कम होती जा रही है।

मिट्टी पौधों की वृद्धि के लिए एक प्राकृतिक माध्यम है। अच्छी उपज के लिए मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों का फसल के अनुसार होना अत्यावश्यक है। इन तीनों में से किसी भी एक गुण में हास होने से उपज प्रभावित होती है। आजकल किसान मिट्टी के भौतिक गुणों को बिना ध्यान में रखे खेती कर रहे हैं, फलस्वरूप उन्हें आशान्वित उत्पादन प्राप्त नहीं हो रहा है। मिट्टी की भौतिक अवस्था दिनप्रतिदिन खराब होती जा रही है और देश की खाद्यान्न स्थिति भी प्रभावित हो रही है।

यदि मिट्टी की भौतिक दशा अच्छी है तो उसकी रक्षा करनी चाहिए। यदि खराब हो तो उसे सुधार कर फसल के अनुरूप बनाना अत्यावश्यक है। मिट्टी की भौतिक दशा सुधारने के लिए किसानों को कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए, जैसे उचित समय पर खेत की जुताई, ठीक प्रकार से तंस-कर्षण क्रियाएं, मिट्टी के कटाव को रोकना, उचित फसल-चक्र अपनाना, हरी खाद और कार्बनिक खादों का उपयोग, पलवार का उपयोग, उचित जल-निकास का प्रबंध और भू-सुधारकों का उपयोग आदि। इसके अतिरिक्त रेतीली और अधिक भारी मिट्टियों की भौतिक दशा सुधारने के लिए वैज्ञानिक विधियों के अनुसार काम करना चाहिए।

अतः मिट्टी एक अमूल्य संसाधन है जिसका उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से किया जाना चाहिए। कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त मृदाओं पर खेती ही की जानी चाहिए, न कि निर्माण कार्य। मकान, पार्क एवं मनोरंजन स्थलों के लिए बंजर एवं अनुपजाऊ भूमि का ही उपयोग करना चाहिए। भूमि का उचित चयन कार्य की सफलता का द्योतक होता है। इससे हमारी उपजाऊ भूमि भी सुरक्षित रहेगी तथा विकास के कार्य भी होते रहेंगे। भू-संसाधन संरक्षण देश के सम्यक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह भारत ही नहीं पूरे विश्व के कल्याण के लिए आवश्यक बिंदु है, हम सभी को अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए।

**मेघा धाकड़**  
**पत्नी - श्री पुष्पेंद्र सिंह धाकड़**  
**कर सहायक**  
**चेन्नई आउटर आयुक्तालय**



# लॉकडाउन में अपने अनुभव

लॉकडाउन अर्थात तालाबंदी। इसके तहत सभी को अपने-अपने घरों में रहने की सलाह दी गई है जिसका सरकार की तरफ से कड़ाई से पालन भी करवाया जा रहा है। यह इसलिए जरूरी है, क्योंकि कोरोना वायरस नामक महामारी मानवजाति के इतिहास में पहली बार आई है। पूरा देश इस वायरस से लड़ने के लिए अपने-अपने घरों में कैद हो गया। इस महामारी के प्रकोप से लाखों लोग अपनी जान गंवा चुके हैं और इससे बचने का सिर्फ एक ही रास्ता है और वो है सोशल डिस्टेंसिंग यानी सामाजिक दूरी। यह संक्रमण एक से दूसरे इंसान तक बहुत तेजी से फैलता है जिसके कारण भारत सरकार ने लॉकडाउन को इससे बचने के लिए आवश्यक कहा। अर्थात लॉक डाउन एक आपातकालीन व्यवस्था है, जो किसी आपदा या महामारी के वक्त लागू की जाती है। जिस इलाके में लॉकडाउन किया जाता है, उस क्षेत्र के लोगों को घरों से बाहर निकलने की अनुमति नहीं होती है। उन्हें सिर्फ दवा और खाने-पीने जैसी जरूरी चीजों की खरीदारी के लिए ही बाहर आने की इजाजत मिलती है। लॉकडाउन के वक्त कोई भी व्यक्ति अनावश्यक कार्य के लिए सड़कों पर नहीं निकल सकता।

## लॉकडाउन के फायदे-

लॉकडाउन से पहले के समय की बात करें तो उस वक्त हम सभी अपने रोजमर्रा के कामों में इतना व्यस्त रहते थे कि अपनों के लिए, अपने परिवार के लिए व बच्चों के लिए कभी समय ही नहीं निकाल पाते थे और सभी की सिर्फ यही शिकायत रहती थी कि आज की दिनचर्या को देखते हुए समय किसके पास है? लेकिन लॉकडाउन से ये सारी शिकायतें खत्म हो गई हैं। इस दौरान अपने परिवार के साथ बिताने के लिए लोगों को बेहतरीन पल मिले हैं। कई प्यारी-प्यारी यादें इस दौरान लोग सहेज रहे हैं, अपने घर के बुजुर्गों के साथ समय बिता रहे हैं और रिश्तों में आई कड़वाहट को मिटा रहे हैं।

लॉकडाउन के दौरान बच्चों को अपने माता-पिता के साथ समय बिताने का मौका मिल रहा है, वहीं जो लोग खाना बनाने के शौकीन हैं, वो यूट्यूब के माध्यम से खाना बनाना भी सीख रहे हैं। पुराने सीरियलों का दौर वापस आ गया है जिसका मजा लोग अपने पूरे परिवार के साथ बैठकर ले रहे हैं और अपनी पुरानी यादों को वापस से जी रहे हैं। बच्चों के साथ वीडियोगेम्स,

कैरम जैसे गृह खेल का बड़ों ने आनंद लिया। विद्यालयों में छुट्टी होने के कारण घर बैठकर शिक्षकों ने ऑनलाइन क्लासेज का सहारा लिया ताकि विद्यार्थियों की शिक्षा में कोई रुकावट न आए।

लॉकडाउन के समय लोग अपने शौक को भी पूरा कर रहे हैं, क्योंकि उनको इसके लिए अपनी खुद की दबी इच्छाओं को पूरा करने का समय मिला है। जो लोग डांस सीखने के शौकीन थे और समय की कमी के कारण नृत्यकला को कहीं-न-कहीं खुद से दूर कर रहे थे, आज वे अपने इस हुनर को निखार रहे हैं। जिन्हें संगीत का शौक है, वो संगीत सीख रहे हैं। पेंटिंग सीख रहे हैं। ऐसे कई शौक लॉकडाउन के दौरान वापस से जी रहे हैं।

लॉकडाउन के रहने से कोरोना वायरस, जिससे पूरा विश्व परेशान है, से छुटकारा पाया जा सकता है। इसलिए यह हम सभी के लिए बहुत जरूरी है। हमारा काम सिर्फ इतना है कि हमें इसका पालन पूरी ईमानदारी के साथ करना है, साथ ही लॉकडाउन से कोरोना वायरस के मरीजों की संख्या में गिरावट आएगी और संक्रमण फैलने का खतरा कम होगा। हमारे रोजमर्रा की जिंदगी की चीजों में कमी न हो इसलिए किराने की चीजें, फल, सब्जी, दवाइयां बाजार में उपलब्ध हैं।

लॉकडाउन के दौरान प्रदूषण में कमी हुई है। अगर लॉकडाउन से पहले की बात करें तो उस समय कारखानों से निकलने वाला कचरा जल में प्रवाहित कर दिया जाता था, गाड़ियों के रास्तों पर दौड़ने से ध्वनि - प्रदूषण और वायु - प्रदूषण हो रहे थे लेकिन लॉकडाउन की वजह से इन सभी चीजों में कमी आई है और आज चिड़ियों की चहचहाहट हमारे आंगन में फिर से सुनाई दे रही है, जो कहीं खो-सी गई थी। नदियों का जल स्वच्छता की ओर अग्रसर हो रहा है।

### लॉकडाउन के नुकसान-

लॉकडाउन की वजह से मजदूरों को बहुत नुकसान हुआ है, जो रोजमर्रा के काम से अपने घर का पेट पालते थे। लॉकडाउन की वजह से देश की अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान हुआ है। कारखानों को बंद रखने के कारण भारी नुकसान वहन करना पड़ रहा है, वहीं व्यापार भी पूरी तरह से ठप पड़ा हुआ है।

दिन-रात सिर्फ कोरोना से संबधित खबरें लोगों को मानसिक रूप से परेशान कर रही हैं, जो उन्हें नकारात्मक कर रही हैं। पूरे दिन घर पर रहने और शारीरिक व्यायाम न होने से लोग खुद को स्वस्थ भी महसूस नहीं कर पा रहे हैं। बच्चे भी पूरे दिन घर पर रहकर चिड़चिड़ापन महसूस करने लगे हैं, क्योंकि वे बाहर खेलने हेतु अपने दोस्तों के साथ मिलने में असमर्थ हैं। कोरोना वायरस की खबरें लोगों को परेशान कर रही हैं जिससे कई लोग डिप्रेशन जैसी समस्या से भी जूझ रहे हैं।

### निष्कर्ष

आज जो विपत्ति पूरे देश पर आई है एसी विपत्ति कभी ना आए। इस विपत्ति ने हमें एक सीख दी है कि हमें आनेवाले समय के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। समस्या बड़ी हो तो उसका रोकथाम भी वृहद होना चाहिए और लॉकडाउन इसी का उदहारण है। इतने बड़े पैमाने पर एक देश को पूरी तरह बंद कर देना न तो आसान है और न ही कोई खेल। इतिहास गवाह है कि भारतीय रेल इससे पहले कभी नहीं रुकी थी, परंतु स्थिति भयावह न हो जाये इसलिये ऐसा कदम उठाया गया। घर पर रहें, सुरक्षित रहें, और कोरोना को हराएं। जब तक हम सभी लॉकडाउन के नियमों का पालन सही तरह से नहीं करेंगे तब तक हम कोरोना को पूरी तरह से नहीं हरा सकते हैं। इस समस्या का समाधान अपने ही हाथों में है।

शेखर सुमन

निरीक्षक

तिरुत्तिराप्पल्लि आयुक्तालय



# मुंशी प्रेमचंद

भारतवर्ष एक ऐसा देश है जहाँ अनेक महापुरुषों, योद्धाओं, लेखकों एवं कवियों ने जन्म लिया। ऐसे ही एक लेखक व उपन्यासकार श्री मुंशी प्रेमचंद जी का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। ये हिंदी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक थे। इनकी माता जी का नाम आनंदी देवी तथा पिता जी का नाम मुंशी अजायबराय था। प्रेमचंद जी की आरंभिक शिक्षा फारसी में हुई। बचपन में ही इनकी माता जी का स्वर्गवास हो गया था। और जब ये पंद्रह साल के हुए तब इनकी शादी कर दी गई थी और सोलह साल में ही इनके पिता जी का भी देहान्त हो गया था, जिसके कारण इनका प्रारंभिक जीवन संघर्षमय रहा।

प्रेमचंद जी को बचपन से ही पढ़ाई में काफी रुचि थी। 13 साल की उम्र में ही इन्होंने तिलिस्म होशरूबा पढ़ लिया और उर्दू के मशहूर रचनाकार रटननाथ 'शरसार' मिर्जा हादी रूस्वा और मौलाना शरर के उपन्यासों से परिचय प्राप्त कर लिया। प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन का आरंभ 1901 से माना जाता है। आरंभ में वे नवाब राय के नाम से उर्दू में लिखते थे। प्रेमचंद जी की पहली रचना, जो अप्रकाशित ही रही, शायद उनका वह नाटक था जो प्रेम से संबंधित था। इसका जिक्र उन्होंने पहली रचना के अपने लेख में किया है। इनका पहला उपलब्ध लेखन उर्दू उपन्यास 'असशोर मआबिद' है जो धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ। 1908 में जब इनका पहला कहानी - संग्रह 'सोजे-वतन' प्रकाशित हुआ तो देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत इस संग्रह को अंग्रेज सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था और इनकी सभी प्रतियां जब्त कर लीं। 'प्रेमचंद' नाम से प्रेमचंद जी की पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' जमाना पत्रिका के दिसम्बर 1910 के अंक में प्रकाशित हुई थी।

1915 में उस समय की प्रसिद्ध हिंदी मासिक पत्रिका सरस्वती के दिसम्बर अंक में पहली बार उनकी कहानी 'सौत' नाम से प्रकाशित हुई। 1918 में इनका पहला हिंदी उपन्यास 'सेवासदन' प्रकाशित हुआ। इसकी अत्यधिक लोकप्रियता ने प्रेमचंद जी को उर्दू से हिंदी का

कथाकार बना दिया। हालांकि इनकी लगभग सभी रचनाएं हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती रहीं। प्रेमचंद जी ने लगभग 300 कहानियाँ तथा डेढ़ दर्जन उपन्यास लिखे।

1921 ई में असहयोग आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के सरकारी नौकरी छोड़ने के आह्वान पर स्कूल इंस्पेक्टर पद से उन्होंने त्याग पत्र दे दिया। इसके बाद लेखन को अपना व्यवसाय बना लिया। 'मर्यादा', 'माधुरी' आदि पत्रिकाओं में वे संपादक पद पर कार्यरत रहे।

इसी दौरान उन्होंने सरस्वती प्रेस भी खरीदा तथा 'हंस' और 'जागरण' पत्रिकाएँ निकालीं। प्रेस उनके लिए व्यावसायिक रूप से लाभप्रद सिद्ध नहीं हुआ। अपना ऋण चुकाने के लिए उन्होंने मोहनलाल भवानी के कंपनी में कहानी लेखक के रूप में काम करने का प्रस्ताव स्वीकार किया था लेकिन फिल्म नगरी प्रेमचंद जी को रास नहीं आई। वह कार्य छोड़कर बनारस लौट आए। जिसके बाद उनका स्वास्थ्य निरंतर बिगड़ता गया और लम्बी बीमारी के बाद 8 अक्तूबर 1936 को उनका निधन हो गया और हिंदी साहित्य ने अपना एक अनमोल रत्न खो दिया। इनकी प्रमुख कृतियाँ - 'गोदान', 'कर्मभूमि', 'रंगभूमि', 'सेवासदन', 'निर्मला' और 'मानसरोवर' आज भी पाठकों द्वारा बहुत पसन्द की जाती हैं।

**किरण देवी**

केयर ऑफ - श्री शोभनाथ

आशुलिपिक-1

चेन्नई उत्तर आयुक्तालय

"क्रोध अत्यंत कठोर होता है। वह देखना चाहता है कि मेरा एक-एक वाक्य निशाने पर बैठा है या नहीं। वह मौन को सहन नहीं कर सकता। ऐसा कोई घातक शस्त्र नहीं है जो उसकी शस्त्रशाला में न हो, पर मौन वह मन्त्र है जिसके आगे उसकी सारी शक्ति विफल हो जाती है।"  
॥ मंशी प्रेमचंद

# भ्रष्टाचार मुक्त समाज

भ्रष्टाचार शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – भ्रष्ट + आचार। भ्रष्ट शब्द से तात्पर्य है – बुरा या अनैतिक और आचार शब्द से तात्पर्य - आचरण या व्यवहार है। अतः भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है बुरा आचरण। दूसरे शब्दों में मनुष्य का अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु अपने नैतिक जीवन मापदंडों से नीचे गिर जाना ही भ्रष्टाचार है। इसका पालन अर्थात् इसको पोषित करने वाले व्यक्ति भ्रष्टाचारी कहलाते हैं।

किसी भी समाज या देश के विकास में भ्रष्टाचार सबसे बड़ा बाधक तत्व होता है। जिस प्रकार से दीमक पेड़ को अंदर ही अंदर खोखला करता रहता है उसी प्रकार भ्रष्टाचार रूपी दीमक भी समाज या देश को अंदर से खोखला कर देता है। अगर यह इसी तरह बढ़ता रहा तो एक दिन यह समाज या देश को नष्ट कर देगा। दुख की बात है कि लोकतांत्रिक देशों में भी भ्रष्टाचार ने अपनी जड़े फैला रखी हैं।

समाज का कोई भी वर्ग आज इससे अछूता नहीं है। इस बात से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसकी जड़ें कितनी गहरी हैं। जब लोग अपने स्वार्थ के लिए अपने नैतिक मूल्यों को ताक पर रख देते हैं तो यह भ्रष्टाचार की बीमारी व्यापक रूप ले लेती है। अगर हम अवलोकन करें कि क्या कारण है कि आज भ्रष्टाचार हर तबके में समाया हुआ है, तो हम यह पाते हैं कि लोगों का असंतोष, असमानता, धन व पद की लालसा ही इसके प्रमुख कारण हैं। मनुष्य अपने स्वभाव के कारण अपनी संतुष्टि को अधिकतम करने का प्रयास करता है और इसी संतुष्टि को पूरा करने हेतु अपना नैतिक पतन कर लेता है। फलस्वरूप वह अनैतिक मार्गों को अपनाकर भ्रष्टाचार रूपी अव्यवस्था का अंग बन जाता है।

मैं भ्रष्टाचार मुक्त समाज की जब कल्पना करता हूँ तब मेरे मन में एक ऐसे समाज की छवि उभरती है जहां लोगों को अपने श्रम से मनचाहा हासिल करने के अवसर हों और इसके लिए उन्हें किसी की जी हजुरी करने की जरूरत न हो। समाज में बेईमानी की कहीं कोई जगह

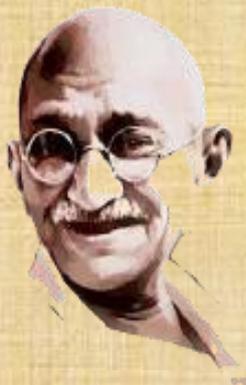
नहीं होनी चाहिये एवं सभी को शिक्षा व रोजगार के समान अवसर प्राप्त होने चाहिए। धर्म, जाति, संप्रदाय या लिंग के आधार पर कोई असमानताएं नहीं होनी चाहिए। ऐसी कल्पना को सच करने हेतु हमें भ्रष्टाचार को रोकने के लिये कड़े नियम और मापदंड अपनाने होंगे तथा आने वाली पीढ़ी को इससे सचेत करना होगा। इसके साथ ही सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि हमें स्वयं को इस बीमारी से दूर रखना होगा। जरूरत है हमें फिर से उन उच्च आदर्शों को दोहराने की, उन्हें फिर से जीवन में उतारने की जिनको हमने किनारा कर लिया है। आवश्यकता इस बात की है कि हम भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ें, सजग रहें, दूसरों को भी जागरूक करें और भ्रष्टाचार मुक्त समाज की तरफ अग्रसर हों।

राहुल

कर सहायक

चेन्नई दक्षिण आयुक्तालय

## सात सामाजिक बुराइयाँ



- ❖ परिश्रम रहित धनोपार्जन
- ❖ विवेक रहित सुख
- ❖ सिद्धांत रहित राजनीति
- ❖ चरित्र शून्य ज्ञान
- ❖ सदाचार रहित व्यापार
- ❖ संवेदना रहित विज्ञान
- ❖ वैराग्य विहीन उपासना

- महात्मा गांधी

# सब अच्छा हुआ

सबने देखा एक पंछी आज़ाद हुआ  
किसने पूछा उस पिंजरे का क्या हुआ

दो बूँद बारिश से खुश हो गयी धरती  
किसने देखा तब बादल को रोता हुआ

इक सितारे से रोशन था मकान मेरा, अब  
दूर तक नहीं दिखता वह चमकता हुआ

मालूम नहीं वजह याद है या कुछ और  
एक चेहरा कब से नहीं देखा सोता हुआ

ईमान और बढ़ गया उस शक्स पर  
जब उसकी आँखों में मैं सस्ता हुआ

कल ताज अच्छा लगेगा तुझ पर  
मेरा क्या मैं एक वक्त हूँ बीता हुआ

ठीक है जो भी हुआ, जो भी ना हुआ  
तू खुश है तो फिर सब अच्छा हुआ ।



प्रेम कुमार

निरीक्षक

चेन्नई आउटर आयुक्तालय

# मील का पत्थर

लाद कर इच्छाओं के बोझ को,  
चली पथिक चींटी तनकर ।  
कड़ी धूप के चुभते तीरों में,  
पाँव टिकाये थी जमकर ।  
तिनका-तिनका जोड़ मकान में,  
श्रम करती दिन रात भूलकर ।  
फिर विचार क्या आया मन में,  
सोच में पड़ गयी काम छोड़कर ।

छोटा कद है छोटी काया,  
क्यों मेहनत कर मकान बनाया ।  
कहीं भी रह लेती यह सोच,  
हुआ चेतना में विस्फोट ।  
व्यर्थ समय कर जाया,  
जीवन में श्रम कर क्या पाया ।  
कर लेती आराम मैं कितना,  
यह पहले क्यों समझ ना आया ।

अब चींटी के थे पग डगमग,  
इच्छाओं के बोझ से दबकर ।  
और कोस रही चींटी आँखों को,  
देखे क्यों सपने बढ़ चढ़ कर ।  
आलस की फिर बदरी छाई,  
ढका मेघ ने श्रमिक दिनकर ।  
कुछ पग चल जीवन डगर पे,  
दिया उतार बोझा थककर ।

अब लगे तन परिमित सा,  
पंख निकल जैसे आये हों ।  
झूम रही है चींटी जग भूले,  
ना पाँव जमीं पे पड़ते हो ।  
प्रमोद विलीन होकर चलती वह,  
भूल विगत के अनुभव को ।  
फिर कुछ ऐसा संकट गहराया,  
बचा ना मूल्य चुकाने को ।

एक आंधी का झोंका आया,  
यथार्थ बना उड़ना चींटी का ।  
और दरिया पे दे मार गया,  
अवलंबित जीवन चींटी का ।  
खोकर सुध-बुध बही जा रही,  
संग छोड़ गया आँसू आँखों का ।  
अब उसको यह समझ में आया,  
जीवन भर था किसने बचाया ।

जिम्मेवारी का यह बोझ ही था,  
थे चलते पग जो धरा पकड़कर ।  
वह श्रम ही था जीवन का धागा,  
जिससे बुनती किस्से थी समय पृष्ठ पर ।  
अंतिम शैय्या पर अटल सत्य तब ज्ञात हुआ,  
आया सारथी मृत्यु का जब आलस बन कर।  
व्यक्तित्व चिन्ह बन छूट गया बस ढाँचा वह पीछे,  
जीवन डगर पे बन आज भी खड़ा, मील का पत्थर...



पीयूष तिवारी

कर सहायक

चेन्नई दक्षिण आयुक्तालय

# इंसान बदल जाते हैं मोहब्बत नहीं बदलती

इंसान बदल जाते हैं मोहब्बत नहीं बदलती,  
जिसको उसे सहा न गया  
जिसको उससे रहा न गया  
जिसको मिलके भी ना नसीब हो ये उसकी गलती ।  
पर इंसान बदल जाते हैं मोहब्बत नहीं बदलती ॥

सुना था हमने मोहब्बत ऐसे ही नहीं मिलती,  
कुछ को ढूँढना पड़ा दर - बदर  
और कुछ को हुई इस क्रदर की  
इन्तज़ार किया तब तक जब तक जान नहीं निकलती ॥  
क्योंकि इंसान बदल जाते हैं मोहब्बत नहीं बदलती ॥

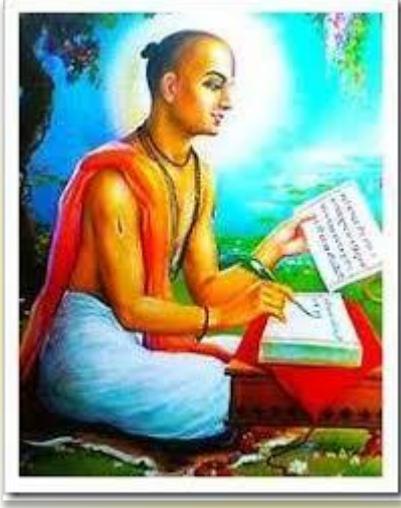
हम जैसों की उससे बग़ैर गुफ़्तगू तबियत नहीं खिलती,  
हमने भी किया कई बार ज़िक्र उनसे,  
रह नहीं पाते उनके बिना ज़ाहिर की ये फ़िक्र उनसे,  
पर क्या करें उनको दुनियादारी से फ़ुर्सत नहीं मिलती ।  
तब लगता है इंसान बदल जाते हैं मोहब्बत नहीं बदलती ।



*V. Sri Sadhana  
D/o Shri S. Velu  
Head Havaldar  
Puducherry Commissionerate*

**पंकज  
निरीक्षक  
तिरुत्त्विराप्पल्लि आयुक्तालय**

# महाकवि तुलसीदास



हिंदी साहित्य के इतिहास को आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल के नाम से विभाजित किया जाता है। भक्ति काल को हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग माना जाता है। मलिक मुहम्मद जायसी, कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई आदि महान कवि इसी युग की देन हैं। सूर, तुलसीदास को कहा जाता है यानी हिंदी साहित्याकाश में सूरदास सूर्य के समान है तो तुलसीदास चंद्रमा के समान है।

हिंदी साहित्य के भक्ति काल में दो काव्य प्रवृत्तियाँ प्रचलित थीं जिन्हें सगुण भक्ति शाखा और निर्गुण भक्ति शाखा कहा जाता है। निर्गुण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं कबीरदास। सगुण भक्ति शाखा की दो उपशाखाएँ हैं राम काव्य और कृष्ण काव्य। राम भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं गोस्वामी तुलसीदास और कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं सूरदास।

गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं और उनकी रचना रामचरित मानस हिंदी साहित्य का सबसे लोकप्रिय काव्य है। विश्व की अनेक भाषाओं में इस काव्य का अनुवाद हुआ है। जनता को सत्य के प्रति सचेत करना गोस्वामीजी का उद्देश्य था। अपनी काव्य-साधना के बलबूते वेद एवं पुराणों के प्रेरक आदर्शों को देश के कोने-कोने तक पहुँचाने का स्तुत्य प्रयास करने वाले तुलसीदास को लोकनायक माना जाता है।

तुलसीदास का जन्म सन् 1532 में बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ। उनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। तुलसीदास ने वेद, पुराण और संस्कृत के काव्य-ग्रंथों का गंभीर अध्ययन किया। तुलसीदास राम के अनन्य भक्त थे, अन्य देवी-देवताओं के प्रति भी वे श्रद्धालु थे। उन्होंने कुल बारह ग्रंथों की रचना की, यथा – रामचरित मानस, विनय पत्रिका, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, कृष्ण गीतावली, कवितावली, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपिनी, रामलला नहचू, दोहावली, रामाज्ञा प्रश्नावली, और गीतावली। उनकी सभी रचनाएँ भक्ति-भाव से ओत-प्रोत हैं। उनके काव्यों में राम चरित मानस और विनय पत्रिका का विशेष महत्व

है। मानस की रचना लोक-कल्याण की दृष्टि से हुई तो विनय पत्रिका कवि का आत्म निवेदन है। दोनों काव्यों में भक्ति रस परिलक्षित है।

तुलसीदास अवधी, ब्रज के साथ-साथ संस्कृत के भी प्रकांड पंडित थे। उनकी रचनाओं में संस्कृत और देश भाषाओं का समन्वय है, शास्त्र और लोक का समन्वय है, भक्ति, ज्ञान और कर्म मार्गों का समन्वय है। उनकी कृतियों में सभी रसों का परिपाक है।

तुलसीदास को ईश्वर के प्रति अपार आस्था थी। उन्होंने राम नाम की महिमा और गुरु महिमा पर बल दिया। अहंकार का त्याग करने का उपदेश दिया। बाह्य आडंबरों का खंडन किया। सामाजिक और धार्मिक विषमताओं का परिष्कार कर समाज को मर्यादा के बंधन में बांध दिया। सगुण भक्ति शाखा के मूर्धन्य कवि होते हुए भी तुलसीदास निर्गुण ब्रह्म के साथ सामंजस्य बिठाते हैं। देखें –

**“ अंक अगुन आखर सगुन समुझिअ उभय प्रकार  
खोएँ राखें आपु भल तुलसी चारु विचार ”**

निर्गुण और सगुण दोनों पर गहराई से विचार कर किसे मानने में भलाई हो – इसे हमें स्वयं तय करने का आग्रह करते हैं तुलसीदासजी।

रामचरित मानस हिंदी की महानतम कृति मानी जाती है। यद्यपि यह महाकाव्य वाल्मीकि रामायण पर आधारित है, तथापि इसमें तुलसीदासजी की अनेक मौलिक उद्भावनाएं पाई जाती हैं। कथानक के बीच-बीच में पात्रानुकूल और मनोवैज्ञानिक संवाद प्रस्तुत कर कवि ने अपनी अब्दुत प्रतिभा का परिचय दिया है। संवाद के जरिए पात्र का चरित्र-विकास करने में तुलसीदास सिद्धहस्त हैं। राम को आदर्श पुरुष के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अतः मानस में राम की लौकिकता स्वतः स्पष्ट है। फिर भी वे महाविष्णु के अवतार हैं, अतः तुलसी ने कतिपय प्रसंगों में राम की अलौकिकता का चित्रण किया है। भाषा और छंद पर तुलसी की पकड़ अतुलनीय है। चरित्र-चित्रण, संवाद-पटुता, रस, छंद, अलंकार, भाषा – किसी भी कसौटी पर रामचरित मानस खरा उतरता है।

**वी. अन्नपूर्णा  
पुत्री डॉ. वी. वेंकटेश्वरा  
उप निदेशक (राजभाषा)  
प्रधान मुख्य आयुक्त कार्यालय, वेन्नई**

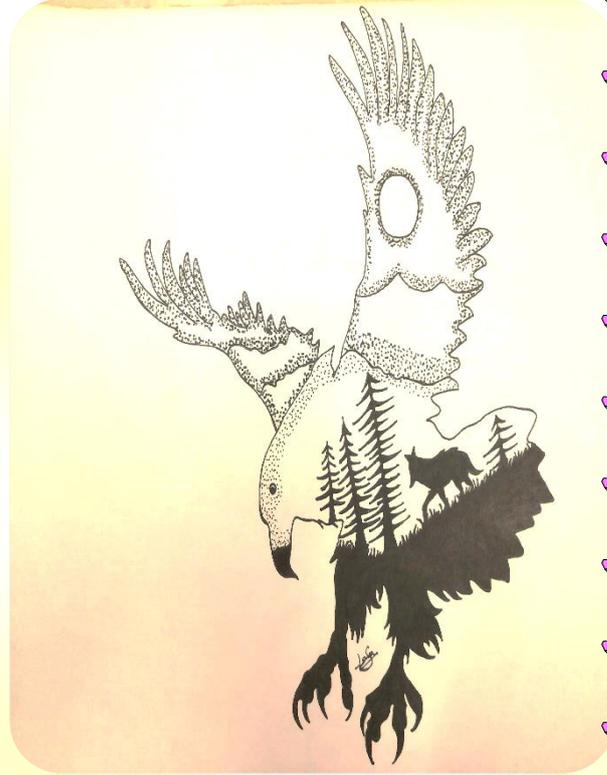
# कैद

मुजस्सम बना के कैद कर लूँ दिल में,  
कि आजकल व्यवहार अच्छा नहीं है।  
कब तक यूँही बाट जोहा करेंगे तेरी,  
उम्र हो गयी आंखों में इंतेजार वही है ॥

ना तुम बदली, और ना बदले हम भी,  
कभी जो जवां था हमारा प्यार वही है।  
एक पल के लिए भी हो जाओ ओझल,  
क्या अब होना दिल का बेकरार सही है ?

शिद्दत अब भी पहली दफ़ा जितनी है,  
मोहब्बत की बात जो कभी तुमसे कही है।  
आज भी सूकून है तेरी जुल्फों के साये में,  
बात यही पुरानी भी है और नई भी है ॥

प्रवेश कुमार  
निरीक्षक  
चेन्नई उत्तर आयुक्तालय



*Vidhya. S*  
*D/O Shri R. Sangurajan*  
*Tax Assistant*  
*Chennai South Commissionerate*

# मजदूर हैं हम

मजदूर हैं हम वादों का अंबार लगा  
एक पूरा बाजार सजा  
हमने पूछा क्या बिकता है  
मेरे आगे दर्पण आया दर्पण रो कर कुछ ना बोला  
तब हम में से कोई बोला मजदूर हैं हम  
इसीलिए कोसों दूर हैं हम !!

कलम की ताकत हमें नहीं  
सिर्फ मेहनत हम में चालाकी नहीं,  
जिसे बनाया वही नहीं  
किस राज्य का हूं पता नहीं  
किस देश का हूं पता नहीं  
इसीलिए कोसों दूर हैं हम !!  
मजदूर हैं हम

इसीलिए कोसों दूर हैं हम  
निःशब्द पड़ा एक कोने में  
सोच रहा हूं पल पल रोने में  
क्या सपने में, क्या अपने में  
कोई तो मिले अपनों में, मजदूर हैं हम  
इसीलिए कोसों दूर हैं !!

सबने मिलकर महल बनाया  
तब हमने उम्मीद जगाया  
सच पूछो तो वो पाया  
जिसके अंदर कुछ न पाया इसके बाद  
समझ में आया  
मजदूर हैं हम  
इसीलिए कोसों दूर हैं हम !!

बिन्टू राम जाट

निरीक्षक

तिरुत्तिराप्पल्लि आयुक्तालय



# प्रेममय व्यवहार

हर व्यक्ति जन्म के दिन से ही माँ के मातृत्व एवं प्रेम से अपना जीवन आरम्भ करता है। माँ का प्यार, दुलार एवं पिता का स्नेह लगभग प्रत्येक बच्चे को जन्म से ही मिल जाता है। बच्चा भी प्रेम की भाषा को अच्छी तरह पहचान लेता है। उसको जो भी प्रेम से पुकारता या पुचकारता है, वह उसमें ही अपनापन महसूस करता है। बच्चा प्रेम भाव के प्रति आकर्षित हो जाता है। धीरे-धीरे वह बड़ा होता रहता है और उसे चारों ओर से भी प्यार ही प्यार मिलता है। साथ ही उसे प्रेम से बात करने, सभी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करने का प्रशिक्षण भी मिलता रहता है।

अब शिक्षा प्राप्ति के लिए वह स्कूल जाने लगता है, वहाँ भी प्रेम का पाठ पढ़ाया जाता है। फिर भी जाने-अनजाने प्रेम में कुछ और भी मिश्रण होता चला जाता है। उसके व्यवहार में भी परिवर्तन की झलक मिलनी आरम्भ हो जाती है। अपने सहपाठियों से प्रतिस्पर्धा एवं मुकाबला करने की प्रवृत्ति को बल मिलने लगता है। प्रतियोगिता में वह अन्य से आगे निकलना चाहता है और इसी होड़ में वह अनायास ही उनसे प्रेम से अलग अन्य भावना से बात करना आरम्भ कर देता है। यहीं से हार-जीत की भावना पैदा होती चली जाती है। जब वह जीत जाता है तो अपने को योग्य मानता है और प्रसन्न भी होता है। अगर वह हार जाता है तो वह जो जीत गए हैं, उनको पीछे छोड़ देने की भावना से ओत-प्रोत हो जाता है। अब यह भावना यदा-कदा द्वेष और दूसरे को गिराने का कारण भी बन जाती है क्योंकि उसका हारना उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाता है। अब जीतना उसके अहंकार की तुष्टि का साधन बन जाता है। इस तरह से जो यात्रा प्रेम से आरम्भ हुई थी, वह द्वेष, अहंकार, प्रतिस्पर्धा एवं प्रतियोगिता में बदल जाती है और उसका स्वरूप बिगड़ जाता है।

यहाँ चिन्तन-मनन का विषय है कि हम सभी कैसे प्रेमपूर्वक रहकर सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रख सकें। इसके लिए हमें हार, जीत, प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा को केवल अपने

आपको और योग्य बनाने की ओर केन्द्रित करना होगा। अपनी मनोस्थिति को इस अवस्था में रखना होगा कि हम स्वयं अपने हर कार्य के प्रति केन्द्रित हों। हार-जीत अथवा प्रतिस्पर्धा हमारे जीवन का उद्देश्य नहीं है यह तो केवल आकलन का तरीका मात्र है। हमें हर कार्य में खेल भावना को अपनाना होगा। जो जीता उसका प्रेमपूर्वक हृदय से अभिवादन करना चाहिए और जो नहीं जीत पाया उसको भी उतनी ही खुशी एवं प्रसन्नता होनी चाहिए और प्रेमपूर्वक परिणाम का अभिनन्दन करना चाहिए।

प्यारे साथियो! हमें हमेशा ही हर स्थिति-परिस्थिति में अपने अन्दर की प्राकृतिक खुशी और प्रेम को सदा बनाए रखना होगा। प्रेम की अवस्था ही हमारे जीवन शैली होनी चाहिए। जन्म से प्रेम से पोषित हुए हमारे संस्कार अन्य संस्कारों को जीवित रखते हैं, इसलिए हम सभी के साथ प्रेम का व्यवहार कर सकें।

कृष्ण राज सिंह यादव  
आशुलिपिक - II  
अपील्स आयुक्तालय  
कोयंबतूर



# खुश हूँ

जिंदगी है छोटी हर पल में खुश हूँ।  
काम में खुश हूँ आराम में खुश हूँ।  
आज पनीर नहीं दाल में खुश हूँ।  
आज गाड़ी नहीं पैदल ही खुश हूँ।

आज कोई नाराज है उसके इस अंदाज से ही खुश हूँ।  
जिसको देख नहीं सकता उसकी आवाज से खुश हूँ।  
जिसको पा नहीं सकता उसको सोच कर ही खुश हूँ।  
बीता हुआ कल जा चुका है उसकी मीठी याद में खुश हूँ।

आने वाले कल का पता नहीं आज में ही खुश हूँ।  
हँसता हुआ जीवन बीत रहा है इस अंदाज में खुश हूँ।  
जिंदगी है छोटी हर पल में खुश हूँ।  
अगर दिल को छुआ, तो शुक्रिया जरूर करना।  
वरना बिना शुक्रिया के भी खुश हूँ।

शोभनाथ  
आशुलिपिक-1  
चेन्नई उत्तर आयुक्तालय



# पिता

तपती धूप में जलते पग चेहरे पर कोई आह नहीं,  
हिमालय बन ढाक रहा यह शीतलता है, अभिमान नहीं ।  
पुष्प सा कोमल मन इसका फिर भी मुख पर अंगारे,  
बेच रहा रक्त मोल पसीने के, है सिर्फ पिता यह भगवान नहीं ।

बन कुम्हार दे रहा आकार करके हस्त कठोर कभी,  
चक्का बनके काल धुरी पे किस्मत पुत्र की घूम रही,  
रूप ले रही गागर का मिलके अनुभव में श्रम की मिट्टी,  
मैली हथेली लिए खड़ा ये, है सिर्फ पिता यह भगवान नहीं ।

नैया पुत्र की उतरे जो घाट कभी बुलंदी की,  
मन में खुशी की लहरें उफने चेहरे पर मुस्कान नहीं ।  
आँखें भूली नींद भी अब सजाने सपनों की दुकान नयी,  
भाग ढिंढोरा पीट रहा ये, है सिर्फ पिता यह भगवान नहीं ।

याद है उसको बालक वह जो हुआ ना कंधे पे महसूस कभी,  
अब उम्मीदें ढूँढे आँखें और कंधा पुत्र का दिखे नहीं ।  
झुकी कमर से चलते दो पग साथ छोड़ लाठी भी जाती,  
बिन खूँटे के पशु घूम रहा ये, है सिर्फ पिता यह भगवान नहीं ।

पहर दो सिर्फ खाना खा के सौंप गया चाभी खुशियों की  
स्वयं प्रेमी कह इसको दुतकारा भूला कब से जो स्वयं को भी  
आँसू जोड़ें अब आँखों से होठ जताए जैसे कुछ खास नहीं  
बचा हुआ भी आशीष लुटा दे, है सिर्फ पिता यह भगवान नहीं ।



बिलखती रोती क्यों आँखें तेरी जीते जी दो आँख न भायी,  
तू भूल गया जीवन अपना सूँ किसने तुझको राह दिखाई,  
पुष्प चढ़ा तस्वीरों पे अब गैरत नहीं धुल पाएगी  
और मंदिर बनवा इसका फायदा क्या, है सिर्फ पिता यह भगवान नहीं ।

**आकांक्षा मिश्रा**  
**पत्नी - श्री पीयूष तिवारी**  
**कर सहायक**  
**वेन्नई दक्षिण आयुक्तालय**



# महिला सशक्तिकरण

तोड़ के हर पिंजरा,  
जाने कब मैं उड़ जाऊँगी,  
चाहे लाख बिछा लो बंदिशे,  
फिर भी दूर आसमान में अपनी जगह बनाऊँगी मैं ।  
हाँ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ,  
भले ही जंजीरों से बांधे हैं दुनिया के लोगों ने पैर मेरे ।  
फिर भी जंजीरों को तोड़ जाऊँगी, मैं किसी से कम नहीं सारी दुनिया को दिखाऊँगी ।  
हाँ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ ।

सी. एम. हर्षवर्धिनी  
पुत्री - श्रीमती के. तिरुवेंकटलक्ष्मी  
प्रशासन अधिकारी  
चेन्नई लेखा परीक्षा - I आयुक्तालय



# रक्षाबंधन

आओ सब रक्षाबंधन मनायें ।

खेलें - कूदें और हर्षायें ।

भाई - बहिनों को खूब सुहाएं ।

सभी के मन में प्रेम जगायें ।

बहनों का मान बढ़ायें ।

भाइयों का रक्षा कवच बन जायें ।

सूत्र शक्ति का बहन पिरोयें ।

अपने आशीष से अजय बनायें ।

भाई की कलाई को सजायें ।

शक्ति उसकी खूब बढ़ायें ।

भाई का यह वचन हो जायें ।

बहिन की रक्षा ध्येय बन जायें ।

जीवन उसका सफल हो जायें ।

कलाई पर जिसके रक्षासूत्र बंध जायें ।



**पुष्पेंद्र सिंह धाकड़**

**कर सहायक**

**चेन्नई आउटर आयुक्तालय**

# तन्हाई

आओ टूटे हुए दिल की, कुछ बात करते हैं ।  
आओ बिखरे हुए यादों की, कुछ बात करते हैं ॥  
मैं तन्हा, तू तन्हा, तन्हा सारा संसार ।  
आओ इस तन्हाई में, कुछ अपनों की बात करते हैं ॥

हकीकतें जिंदगी गम बयां करती हैं ।  
ए दिल, आज हम सपनों की बात करते हैं ॥  
गैरों की बात करते हैं, अपनों की बात करते हैं ।  
बेवक़्त बात करते हैं, बेबाक बात करते हैं ॥

ए दिल इस तन्हाई में बीते वक़्त की बात करते हैं ॥  
आओ इस तन्हाई में, किसी अपने को याद करते हैं ॥  
॥ किसी अपने को याद करते हैं ॥



**एस. पाठक**  
**अधीक्षक**  
**पुदुच्चेरी आयुक्तालय**

**ए. रुमैसा**  
**केयर ऑफ - श्री ए. हुसैन शरीफ**  
**वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी**  
**चेन्नई उत्तर आयुक्तालय**

# प्यारी साइकिल

ज़िन्दगी कैसे दो पहियों पे चलती है,  
बता दिया था तुमने ।  
जब पहली बार गिरे थे,  
तभी उठना सिखा दिया था तुमने ।  
पीछे बैठा शख्स कभी बोझ नहीं लगता,  
साथी का असली मतलब बता दिया था तुमने ।  
हर पैडल के बाद कम होती दूरी,  
मेहनत और मंज़िल का रिश्ता समझा दिया था तुमने ।  
आएगा ज़िन्दगी में काम मेरे,  
वह सब कुछ बचपन में ही सिखा दिया था तुमने ।



**आदित्य शुक्ला**  
**पुत्र - श्रीमती के. दीपमाला शुक्ला**  
**कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी**  
**चेन्नई दक्षिण आयुक्तालय**



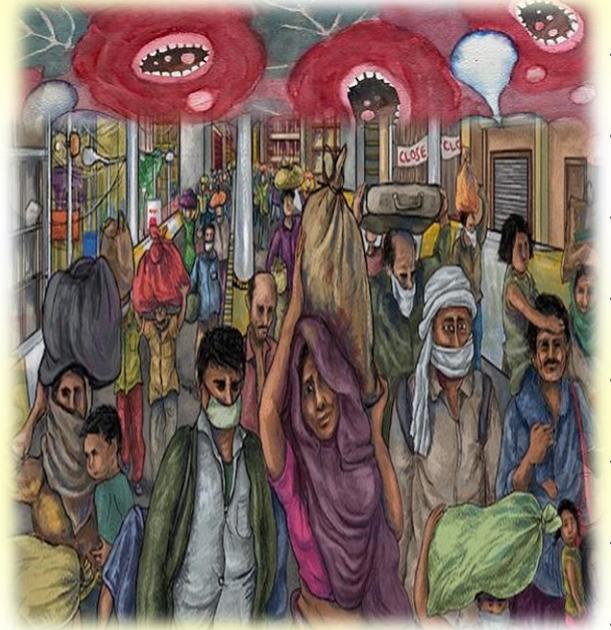
# महामारी

आज वायरस ने अपने कदम बढा दिए हैं,  
उड़ती पतंग की तरह अपने पंख फैला लिए हैं।

दो वक्त की रोटी को तरसता था जो,  
वो अब अपनी खुराक जुटाएगा कैसे ?  
झोंपडी में रहने वाला गरीब  
अब अशियाना बनाएगा कैसे ?

टूट जायेंगे ख्वाब उनके भी,  
जिन्होंने जिंदगी की चंद खुशियों के लिए,  
चार पैसे बचाए थे।

जो पैसों में तुलते हैं, वो तो जिंदगी जी भी लें,  
पर जो पसीना बहाकर कमाता है  
वो अब अपनी भूख मिटाएगा कैसे ?



अनुभव प्रसाद  
केयर ऑफ - सुधांशु कुमार  
निरीक्षक  
चेन्नई उत्तर आयुक्तालय

# माँ सब जानती है

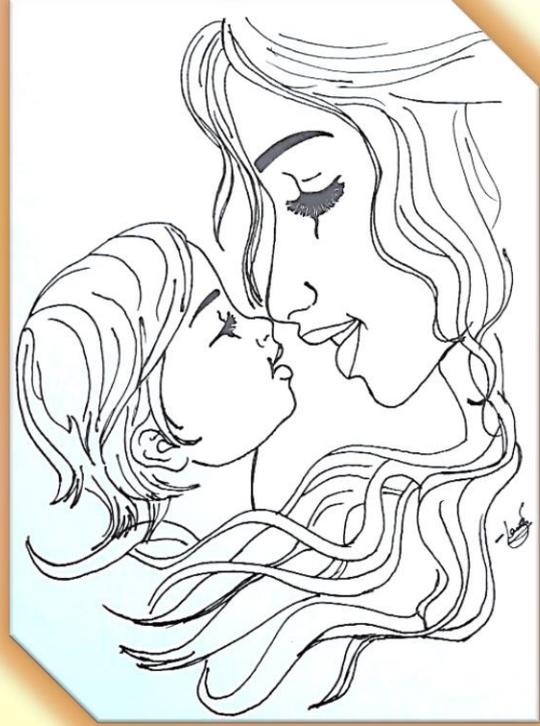
माँ सब जानती है,  
मुझे खुद से भी ज्यादा पहचानती है,  
लाख कोशिश कर लूं मैं छिपाने की,  
मेरे हर सुख-दुख को वो जानती है।

खुद जागकर मुझे सुलाती है,  
खुद रोकर मुझे हंसाती है,  
तनहा रहती है खुद मगर,  
मेरा साथ हमेशा निभाती है  
माँ सब जानती है।

जब मुझे चोट लगे तो सिसकती है मां,  
जब मैं गलती करूं तो समझाती है मां,  
जब मेरी आंखें भीगें आंसुओं से,  
तो पोंछ देती है अपने आंचल से,  
माँ सब जानती है।

उसकी हर दुआ कबूल है,  
वो तो ममता का फूल है,  
शायद तभी भगवान से भी  
ऊपर आती है,  
एक सच्चा दोस्त कहलाती है,  
माँ सब जानती है।

पर माँ आज मुझसे इतनी दूर क्यों है,  
चाह कर भी इतनी कठोर क्यों है,  
देख मेरी आंखें आज फिर से नम हैं,  
पर आज ना तेरी ममता और न हीं तेरा आंचल है,  
स्वर्ग में होगी माँ तब भी, माँ सब जानती है।



*Lavanya S.*  
*D/O, Shri R. Sangurajan*  
*Tax Assistant*  
*Chennai South Commissionerate*

**बिनीत कुमार गुप्ता**  
**कर सहायक**  
**प्रधान मुख्य आयुक्त कार्यालय, चेन्नई**

# साहित्य और समाज



आचार्य महावीर प्रसाद जी ने ठीक ही कहा है: 'साहित्य समाज का दर्पण है'। साहित्य अपने समय का प्रतिबिम्ब होता है, वह समाज के गूंगे इतिहास का मुखर उदाहरण देता है।

साहित्य और समाज का अभेद्य संबंध है। ये अन्योन्याश्रित हैं। समाज यदि शरीर है तो आत्मा उसकी साहित्य। साहित्य मानव की देन है, मानव सामाजिक प्राणी है, उसका पालन, विकास सब कुछ समाज में ही होता है। समाज में जैसी भावनाएं और विचार होंगे तत्कालीन साहित्य भी वेसा ही होगा। साहित्य कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, सिनेमा आदि रूपों में व्यक्त होता है। सदियों से किस स्थान पर कौन सी बोली बोली जाती थी, उस समय की वेश भूषा क्या थी, सामाजिक और धार्मिक दशा कैसी थी, यह सब कुछ तत्कालीन साहित्य के अध्ययन से ही ज्ञात होता है। बरसों पहले भारत शिक्षा और अध्यात्मिक क्षेत्र में उन्नति की चरम सीमा पर था, यह बात हमें साहित्य से पता चलता है। जिस देश और समाज के पास जितना उन्नत और समृद्धशाली साहित्य होगा वह देश और समाज उतना ही उन्नत और समृद्धशाली समझा जाएगा। जैसे भोजन शरीर की क्षुधा तृप्त करती है वैसे ही साहित्य भी हमारे मस्तिष्क की क्षुधा तृप्त करता है। साहित्य के द्वारा हम अपने गौरवमयी इतिहास, देश की गरिमा, संस्कृति और सभ्यता, पूर्वजों के विचारों एवं अनुसंधानों, प्राचीन रीति - रिवाजों, रहन - सहन और परम्पराओं से परिचय प्राप्त करते हैं।

साहित्य समाज की प्रतिच्छाया और प्रतिध्वनि होती है। समाज के वातावरण की नींव पर ही साहित्य की रचना होती है। जिस समाज की जैसी परिस्थितयां होंगी वैसे ही उसका साहित्य होगा।

सुधांशु कुमार

निरीक्षक

चेन्नई उतर आयुक्तालय

# डिप्रेशन का मजाक



ना हर दिन एक सा, ना हर रात एक सी। न जाने लोग कब समझेंगे ये बात। क्यों हम किसी का दिल दुखाते हैं उसकी रात देख कर, क्यों भूल जाते हैं कि उसकी रात की भी सुबह आएगी और हमारे दिन की भी रात आएगी। और जिस दिन हमारी बारी आएगी उस दिन शायद हम खुद से नजरें भी न मिला पाएं। क्यों न हम आज की कद्र करें, खुद खुश रहें और औरों को भी रहने दें। एक दूसरे के दिन - रात का हौसला बनें। क्यों किसी को तोड़ने में लगे रहते हैं। सब एक - से नहीं होते, कुछ में फिर उठने की हिम्मत होती है, पर उन कुछ का क्या जिनका हम जाने - अनजाने सब कुछ बिखेर देते हैं। फिर उन्हें न तो सुबह का इंतजार रहता है न फिर किसी सुबह का फर्क पड़ता है जाने अनजाने में अंधेरे और अकेलेपन से प्यार कर बैठते हैं। यही तो है वो जिसे आम भाषा में 'डिप्रेशन' कहते हैं। न जाने कितने ही लोग इसका शिकार हो चुके हैं और न जाने कितने ही और होंगे। हम नहीं जानते, न पहचान सकते हैं। न ही इसके आम बीमारियों जैसे लक्षण हैं। यह महज एक मजाक, हाँ जी आपने सही पढ़ा महज एक मजाक से भी शुरू हो सकता है। क्या इतना जरूरी है किसी पे फब्तियां कसना, किसी का मजाक बनाना, किसी को नीचा दिखाना। क्या यही एक मात्र जरिया रह गया है अपनी खुशी का, फिर चाहे उससे सामने वाला डिप्रेशन में ही क्यों न चला जाए। ऐसा नहीं है कि मजाक करना खराब है पर ये जरूरी नहीं कि हर किसी में मजाक सहने की क्षमता हो, उसकी समझ इतनी हो कि वह मजाक को हल्के में ले सके। कभी कभी हम भी तो सामने वाले की मनोदशा के अनुरूप आचरण कर सकते हैं। कोशिश तो कर सकते हैं कि हम किसी के अंधेरे का कारण न बनें।

मजाक बहुत छोटा होता है परन्तु समस्या गंभीर है। क्षण - भर की समझदारी बहुत कुछ बदल सकती है। वैसे भी समय किसी का सगा नहीं होता। आज किसी और की समस्या व परिस्थिति कल आपकी भी हो सकती है। तो कोशिश कीजिये समस्या का नहीं समाधान का हिस्सा बनिये, क्योंकि याद रखिये न हर दिन एक - सा होता है न हर रात एक - सी होती है।

अमृता कुमारी

आशुलिपिक-II

चेन्नई उत्तर आयुक्तालय

# प्रकृति

क्यों न सहेज कर रख लें  
इस प्रकृति को  
आने वाले कल के लिए  
आने वाले अपनों के लिए  
ये कटते वृक्ष  
ये सूखती नदियाँ  
ये सिमटते पर्वत  
एक रोज  
यूँ ही खत्म हो जाएंगे  
आज हम कुछ कर सकते हैं  
इस रोती हुई प्रकृति के आँसू  
हम पोंछ सकते हैं  
एक वक्त बाद प्रकृति के  
सारे आँसू सूख जाएंगे  
पर आँसू होंगे  
हमारी आँखों में  
जिसे चाह कर भी  
हम पोंछ नहीं पाएंगे  
हम पुकारेंगे प्रकृति को  
अपनी मदद के लिए पर  
मौत की खामोशी ओढ़े  
वो बेजान पड़ी  
बस यूँ ही देखती रहेगी ।



**अंजली कुमारी**

**बहन - अमृता कुमारी, आशुलिपिक-II**

**चेन्नई उतर आयुक्तालय**

# बाज के बच्चे

बाज, ऐसा पक्षी जिसे हम हॉक (Hawk) भी कहते हैं। जिस उम्र में बाकी परिंदों के बच्चे चिचियाना सीखते हैं उस उम्र में एक मादा बाज अपने चूजे को पंजे में दबोच कर सबसे ऊंचा उड़ जाती है। पक्षियों की दुनिया में ऐसी कठोर और कठिन प्रशिक्षण किसी भी और की नहीं होती।

मादा बाज अपने चूजे को लेकर लगभग 12 किलोमीटर ऊपर ले जाती है। जितने ऊपर आधुनिक जहाज उड़ा करते हैं और वह दूरी तय करने में मादा बाज 7 से 9 मिनट का समय लेती है।

यहां से शुरू होती है उस नन्हें चूजे की कठिन परीक्षा। उसे अब यहां बताया जाएगा कि तू किस लिए पैदा हुआ है ? तेरी दुनिया क्या है ? तेरी ऊंचाई क्या है ? तेरा धर्म बहुत ऊंचा है और फिर मादा बाज उसे अपने पंजों से छोड़ देती है।

धरती की ओर ऊपर से नीचे आते वक्त लगभग 2 किलोमीटर उस चूजे को आभास ही नहीं होता कि उसके साथ क्या हो रहा है। 7 किलोमीटर के अंतराल के आने के बाद उस चूजे के पंख जो कंजाइन से जकड़े होते हैं, वह खुलने लगते हैं।

लगभग 9 किलोमीटर आने के बाद उनके पंख पूरे खुल जाते हैं। यह जीवन का पहला दौर होता है जब बाज का बच्चा पंख फड़फड़ाता है।

अब धरती से वह लगभग 3000 मीटर दूर है लेकिन अभी वह उड़ना नहीं सीख पाया है। अब धरती के बिल्कुल करीब आता है जहां से वह देख सकता है उसके स्वामित्व को। अब उसकी दूरी धरती से महज 700/800 मीटर होती है लेकिन उसका पंख अभी इतना मजबूत नहीं हुआ है कि वो उड़ सके।

धरती से लगभग 400/500 मीटर दूरी पर उसे अब लगता है कि उसके जीवन की शायद अंतिम यात्रा है। फिर अचानक से एक पंजा उसे आकर अपनी गिरफ्त में लेता है और अपने पंखों के दरमियान समा लेता है।

यह पंजा उसकी मां का होता है जो ठीक उसके ऊपर चिपक कर उड़ रही होती है और उसकी यह ट्रेनिंग निरंतर चलती रहती है जब तक कि वह उड़ना नहीं सीख जाता।

यह ट्रेनिंग एक कमांडो की तरह होती है। तब जाकर दुनिया को एक बाज़ मिलता है अपने से दस गुना अधिक वजनी प्राणी का भी शिकार करता है।

हिंदी में एक कहावत है... "बाज़ के बच्चे मुँडेर पर नहीं उड़ते।" बेशक अपने बच्चों को अपने से चिपका कर रखिए पर उसे दुनिया की मुश्किलों से रूबरू कराइए, उन्हें लड़ना सिखाइए। बिना आवश्यकता के भी संघर्ष करना सिखाइए।

वर्तमान समय की अनन्त सुख सुविधाओं की आदत व अभिवावकों के बेहिसाब लाड़ प्यार ने मिलकर, बच्चों को "ब्रायलर मुर्गे" जैसा बना दिया है जिसके पास मजबूत टंगड़ी तो है पर चल नहीं सकता। वजनदार पंख तो हैं पर उड़ नहीं सकता क्योंकि "गमले के पौधे और जंगल के पौधे में बहुत फ़र्क होता है।"

**देवोत्तम कुमार त्रिवेदी**

**कर सहायक**

**मदुरै आयुक्तालय**



# काल की पुकार

कहेंगे तरक्की ! बोलेंगे उन्नति !  
किसका यह सब – मैं नहीं जानता !  
कहेंगे परिवर्तन! बोलेंगे बदलाव !  
किसका यह सब- मैं नहीं जानता !

कहेंगे नवयुग ! बोलेंगे प्रगति !  
किसका यह सब - मैं नहीं जानता !  
कहेंगे एकता ! बोलेंगे सहयोग !  
किसका यह सब- मैं नहीं जानता !

पर सिर्फ एक जानता प्रेम की आवश्यकता  
अब चाहिए हमें एक ही बात !  
प्रेम भरी मानवता ! प्यार भरी मनुष्यता !  
अब चाहिए हमें एक ही बात !  
अब चाहिए हमें परिपक्व दिमाग !  
अब चाहिए हमें मानवीय भाव !  
अब चाहिए हमें मानव जाति की एकता !

अब चाहिए हमें सब भाषाओं की मर्यादा !  
अब चाहिए हमें मनुष्य की समता, ममता !

के. सरण्या  
पुत्री - श्री डी. कृष्णमूर्ति  
अधीक्षक  
प्रधान मुख्य आयुक्त कार्यालय, चेन्नई

# मानसिक स्वास्थ्य



आज के समय में, कोरोना वायरस के कारण शारीरिक स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। वायरस को फैलने से रोकने के लिए मास्क पहनना, हाथ धोना आदि निवारक उपायों का पालन किया जा रहा है। शारीरिक स्वास्थ्य के अलावा एक दूसरा स्वास्थ्य भी है जिसे इस समय में क्या आम समय में भी नज़र अंदाज किया जाता है। वह हैं मानसिक स्वास्थ्य।

इस वक्त वायरस को नियंत्रण में रखने के लिए सरकार ने लाकॅडाउन नियम बनाए हैं। इन नियमों के अनुसार, निर्धारित समय में ही बाहर जाने की अनुमति है। इसके कारण सब को कई महीनों से घर के अंदर ही रहना पड़ा है। ऐसे घर में बंद रहना किसी व्यक्ति के मानसिक संतुलन पर बुरा प्रभाव डालता है। किसी की कमाई, किसी के घर का मामला या फिर किसी की शिक्षा आदि अनिश्चित रूप से प्रभावित हो गई हैं। ऐसी परिस्थिति में, मानसिक तनाव बढ़ जाता है और स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

मानसिक तनाव को कम करने के कुछ उपाय हैं। पहला उपाय है - स्वीकृति। हमें स्वीकार करना चाहिए कि तनाव है। स्वीकृति से ही चिकित्सा शुरू होती है। दूसरा उपाय है किसी से अपनी समस्या बांटना। इससे भार कम हो जाता है और कुछ उपाय मिलने की संभावना रहती है। सकारात्मक सोच अपनानी चाहिए। उत्पादक कार्यों में निमग्न होना चाहिए ताकि छोटी-सी जीत भी मानसिक तनाव को कम कर सके। इंसान तभी पूरा स्वस्थ माना जाता है जब वह शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों से स्वस्थ है।

**आर. शांता**  
मुख्य लेखा अधिकारी  
प्रधान मुख्य आयुक्त कार्यालय, चेन्नई

# मेरी माँ

तू धरती पर खुदा है माँ !  
तू सबसे जुदा है माँ !  
पंछी को छाया देते पेड़ों की डाली है तू,  
सूरज से रौशन होते चेहरे की लाली है तू,  
पौधों को जीवन देती मिट्टी की क्यारी है तू,  
सबसे अलग, सबसे जुदा, माँ सबसे न्यारी है तू,  
तू रौशनी का खुदा है माँ !  
तू सबसे जुदा है माँ !  
सूरज से तपते आँगन में बारिश की बौछार है तू,  
जीवन के सूने उपवन में कलियों की बहार है तू,  
खतरों से रक्षा करती, सदा खड़ी दीवार है तू,  
ईश्वर का सबसे प्यारा और सुंदर उपहार है तू,  
तू फरिश्तों की दुआ है माँ,  
तू सबसे जुदा है माँ ।



एस. कीर्तना

पुत्री - श्री के. एस. श्रीनिवासन

हवलदार

चेन्नई लेखा परीक्षा - I आयुक्तालय



# कोरोना वायरस और लॉकडाउन

लॉकडाउन की वजह से लोग अपने ही घरों में कैद हैं। जो लोग कल तक चाय का कप धोने के लिए भी नौकरानी बाई पर निर्भर रहते थे, वे आज झाडू-पोछा लगाने से लेकर खाना बना रहे हैं और बर्तन साफ कर रहे हैं। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि कोरोना वायरस ने लोगों को आत्मनिर्भर बना दिया है। अब सवाल कोरोना वायरस और लॉकडाउन के बाद की जिंदगी का है। आइए समझते हैं कोरोना के बाद लोगों की जिंदगी कैसी होगी ?

## साफ-सफाई :-

कोरोना महामारी फैलने के बाद हमें साफ-सफाई की अहमियत समझ में आई है। मेट्रो की सीढ़ियों के हैंडल पर हाथ रखकर चलना, लिफ्ट में एक कोने में जाकर टेक लेना, नाखूनों को मूँह से काटना, नाक में उंगली करना आदि आदतें हमारी दिनचर्या में शामिल थीं जो अब धीरे-धीरे खत्म हो रही हैं। बच्चों को लेकर कहा जाता है कि वे साफ-सफाई से नहीं रहते, लेकिन कोरोना महामारी ने उन्हें भी अब बदल दिया है।

## आत्म निर्भरता :-

बचपन से ही हमें माता-पिता से सीख मिलती है कि बेटी/बेटा आत्म निर्भर बनो। लड़का हो या लड़की उन्हें घर-गृहस्थी का काम तो आना ही चाहिए, हालांकि कई लोग इन सब बातों को नहीं मानते, ऐसे लोग फिर होटल या ऑनलाइन खाना डेलिवर करने वाली कंपनियों पर निर्भर रहते हैं, लेकिन लॉकडाउन ने यह बता दिया कि घर-गृहस्थी का काम सीखना कितना जरूरी है। लॉकडाउन में सबसे अधिक परेशानी ऐसे लोगों को ही हो रही है।

## नशा :-

लॉकडाउन में सबसे ज्यादा परेशानी जिन लोगों को हो रही है उनमें नियमित रूप से शराब सेवन करने वाले भी शामिल हैं। जो लोग रोज शराब पीते थे वे भी आज आराम से घरों में बिना शराब पिये रह रहे हैं और 21 दिन किसी भी आदत को छोड़ने के लिए काफी है।

## परिवार से लगाव :-

लॉकडाउन और कोरोना ने लोगों के पारिवारिक रिश्तों को मजबूत किया है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि जो लोग कल तक परिवार से दूर भाग रहे थे उन्हें भी आज परिवार की याद आ रही है। लॉकडाउन की वजह से लोगों को अपने बच्चे और परिवार के साथ समय बिताने का मौका मिला है जिसका सुखद परिणाम भविष्य में देखने को मिलेगा। कोरोना खत्म होने के बाद लोगों के पारिवारिक रिश्तों में मजबूती देखने को मिलेगी।

## वर्क फ्रम होम :-

कुछ दिन पहले एक रिपोर्ट आई थी जिसमें अनुमान लगाया गया था कि लॉकडाउन खत्म होने के बाद भी कई कंपनियां वर्क फ्रम होम (घर से आफिस का काम) एक ट्रेंड बना सकती हैं, क्योंकि वर्क फ्रम होम की स्थिति में कर्मचारी के लिए आफिस में कोई ढांचे की जरूरत नहीं है। कई ऐसी कंपनियां पहले से ही वर्क फ्रम होम की सुविधा दे रही हैं।

**वी. काव्य श्री**  
**पुत्री - श्री डी. विजय कुमार**  
**चेन्नई उतर आयुक्तालय**



# जिन्दगी का खेल

मनुष्य का जीवन एक प्रकार का खेल है और मनुष्य इस खेल का मुख्य खिलाड़ी है।

यह खेल मनुष्य को हर पल खेलना पड़ता है। इस खेल का नाम है “विचारों का खेल”। इस खेल में मनुष्य को दुश्मनों से बचकर रहना पड़ता है। मनुष्य अपने दुश्मनों से तब तक नहीं बच सकता जब तक मनुष्य के मित्र उसके साथ नहीं हैं। मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र “विचार” है और उसका सबसे बड़ा दुश्मन भी विचार ही है।

मनुष्य के मित्रों को **सकारात्मक विचार** कहते हैं और मनुष्य के दुश्मनों को **नकारात्मक विचार** कहा जाता है। मनुष्य का जीवन विचारों के चयन का एक खेल है। इस खेल में मनुष्य को यह पहचानना होता है कि कौन - सा विचार उसका दुश्मन है और कौन - सा उसका दोस्त, और फिर मनुष्य को अपने दोस्त को चुनना होता है। हर एक दोस्त अपने साथ कई अन्य दोस्तों को लाता है और हर एक दुश्मन अपने साथ अनेक दुश्मनों को लाता है। इस खेल का मूल मंत्र यही है कि मनुष्य जब निरंतर दुश्मनों को चुनता है तो उसे इसकी आदत पड़ जाती है और अगर वह निरंतर दोस्तों को चुनता है, तो उसे इसकी आदत पड़ जाती है।

मनुष्य के पास जब ज्यादा मित्र रहते हैं और उसके दुश्मनों की संख्या कम रहती है तो मनुष्य निरंतर, इस खेल को जीतता जाता है। मनुष्य जब जीतता है तो वह अच्छे कार्य करने लगता है और सफलता उसके कदम चूमती है, सभी उसकी तारीफ करते हैं और वह खुश रहता है। लेकिन जब मनुष्य के दुश्मन, मनुष्य के मित्रों से शक्तिशाली हो जाते हैं, तो मनुष्य हर पल इस खेल को हारता जाता है और निराश एवं क्रोधित रहने लगता है।

जो लोग इस खेल को खेलना सीख जाते हैं वे सफल हो जाते हैं और जो लोग इस खेल को समझ नहीं पाते वे बर्बाद हो जाते हैं। इस खेल में ज्यादातर लोगों की समस्या यह नहीं है कि वे अपने दोस्तों और दुश्मनों को पहचानते नहीं बल्कि समस्या यह है कि वे दुश्मनों को पहचानते हुए भी उन्हें चुन लेते हैं। ईश्वर, मनुष्य को समय-समय पर कई तरीकों से यह समझाते रहते हैं कि इस खेल को कैसे खेलना है लेकिन यह खेल मनुष्य को ही खेलना पड़ता है।

जब मनुष्य इसमें हारता रहता है और यह भूल जाता है कि इस खेल को कैसे खेलना है तो ईश्वर फिर उसे बताते हैं कि इस खेल को कैसे खेलना है ।

यही है जीवन !!!!!

**एस. पवित्रा**

पुत्री - के. शिवसुब्रमणियन

चालक ग्रेड - I

प्रधान मुख्य आयुक्त कार्यालय, चेन्नई



“मैं नहीं चाहता चिर – सुख  
मैं नहीं चाहता चिर – दुःख  
सुख – दुःख की खेल मिचौनी  
खोलें जीवन अपना मुख  
सुख – दुःख के मधुर मिलन से  
यह जीवन हो परिपूर्ण  
फिर घन में ओझल हो शशि  
फिर शशि से ओझल हो घन ।”

- सुमित्रा नंदन पंत



# बस थोड़ा सा

जीवन की अंतिम तिथि जब आती है,  
लगता है और थोड़ा सा जी लूं,  
सारा जीवन मर कर गुज़ार दी,  
अब तो थोड़ा सा सांस ले लूं।

खिलौने से खेलना छोड़ चुके हम सदियों पहले,  
ज़िन्दगी को खेल की तरह अब खेलूं, दिल इतना सा सहले,  
मौज की रवानियों में आज देख लें मौजे है कितनी,  
हिसाब का खता गुमाकर  
ज़रा बेहिसाबी तो कर लूं।  
जीवन की अंतिम तिथि जब आती है,  
लगता है और थोड़ा सा जी लूं।

टूटे रिश्ते आज जुड़ से गए हैं,  
देख तेरी आँखों से भी आंसू ढह गए हैं,  
आंसुओं की रेखा दुश्मनी नहीं,  
दोस्ती की कहानी कह जाती है,  
पर तेरी सिसकियाँ मुझे रुलाए जाती हैं।  
जीवन की अंतिम तिथि जब आती है,  
लगता है और थोड़ा सा जी लूं।

पर यह सच है – ज़िंदगी की कीमत कम है,  
लाशों से प्रेम जताते हैं लोग,  
जब दिल में धड़कन होती है,  
तब झिर्कियाँ बरसाते हैं लोग,  
कब्र में गिरते ही फूल बरसाते हैं लोग।

सोचती हूँ ज़िन्दगी में इतनी रुसवाईयां मिलीं,  
अब थोड़ी सी मोहब्बत मिल जाए,  
किसी दीवार पर लग, बस एक फूलों की हार मिल जाए।  
जीवन के अंतिम क्षण जब आते हैं,  
लगता है और थोड़ा सा..... ।

**अनिन्दिता बनर्जी**  
**कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी**  
**प्रधान मुख्य आयुक्त कार्यालय, चेन्नई**



# चेन्नई उत्तर आयुक्तालय



सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2019 के दौरान मंचासीन सुश्री पी. हेमावती, तत्कालीन प्रधान आयुक्त, चेन्नई उत्तर आयुक्तालय, मुख्य अतिथि श्री रामू मणिवण्णन, शोध विद्वान, मद्रास विश्वविद्यालय एवं श्री एम. अजित कुमार, तत्कालीन प्रधान मुख्य आयुक्त, चेन्नई ।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2019 के दौरान सभा को संबोधित करते हुए तत्कालीन प्रधान मुख्य आयुक्त श्री एम. अजित कुमार ।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2019 के दौरान सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री रामू मणिवण्णन ।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2019 के दौरान पुरस्कार वितरित करते हुए मुख्य अतिथि श्री रामू मणिवण्णन ।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2019 के दौरान पुरस्कार वितरित करते हुए तत्कालीन प्रधान मुख्य आयुक्त श्री एम. अजित कुमार ।

# चेन्नई दक्षिण आयुक्तालय



प्रधान मुख्य आयुक्त द्वारा चेन्नई दक्षिण आयुक्तालय के निरीक्षण के दौरान तत्कालीन प्रधान मुख्य आयुक्त श्री **एम. अजित कुमार** का पुष्प गुच्छ से स्वागत करते हुए आयुक्त श्री **के. एम. रविचन्द्रन**।



गणतंत्र दिवस समारोह 2020 के अवसर पर श्री **के. एम. रविचन्द्रन**, आयुक्त, चेन्नई दक्षिण आयुक्तालय का संबोधन।



गणतंत्र दिवस समारोह 2020 के अवसर पर आयुक्त श्री **के. एम. रविचन्द्रन**, राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए।

# चेन्नई आउटर आयुक्तलय



चेन्नई ट्रेड सेंटर में आयोजित जी. एस. टी. सूचना गैलरी।  
(दिनांक 05.10.2019 से 08.10 2019 तक)



दिनांक 02.11.2019 को 'ईमानदारी- एक जीवन शैली'  
विषय पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेते  
अरुण्डेल सीनियर सेकन्डरी विद्यालय, कलाक्षेत्र फाउंडेशन  
के विद्यार्थीगण।



महिला दिवस समारोह 2020 के अवसर पर  
कलाक्षेत्र फाउंडेशन की छात्राओं के साथ  
श्री जी. रवींद्रनाथ, आयुक्त।



महात्मा गांधी की 150 वीं वर्षगांठ के अवसर पर  
दिनांक 26.01.2020 से 31.01.2020 तक आयोजित  
महात्मा गांधी की चित्र - प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में  
श्री जी. रवींद्रनाथ, आयुक्त एवं अन्य अधिकारीगण।



एस.बी.ओ.ए. स्कूल, चेन्नई के छात्र-छात्राओं द्वारा  
गांधी चित्र - प्रदर्शनी का संदर्शन।

# चेन्नई अपीलस - I आयुक्तलय



दिनांक 10.10.2019 को स्वच्छता परियोजना का उद्घाटन करते हुए श्री भरत असारसा, आयुक्त एवं अन्य अधिकारीगण ।

दिनांक 23.12.2019 को पौधारोपण करते हुए श्री भरत असारसा, आयुक्त ।



दिनांक 26.02.2020 को थाउजेंड लाइट्स, चेन्नई में स्थित आंगनवाड़ी में आर. ओ. - जल शुद्धिकरण मशीन के उद्घाटन के दौरान विद्यार्थियों में मिठाई वितरित करते हुए श्री भरत असारसा, आयुक्त ।



# वेबिनर्ई अपीलस - II आयुक्तलय



सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2019 के दौरान आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लेते अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2019 के अवसर पर श्री भरत असारसा, आयुक्त पुरस्कार वितरित करते हुए ।

# चैन्नई लेखा परीक्षा - I आयुक्तालय



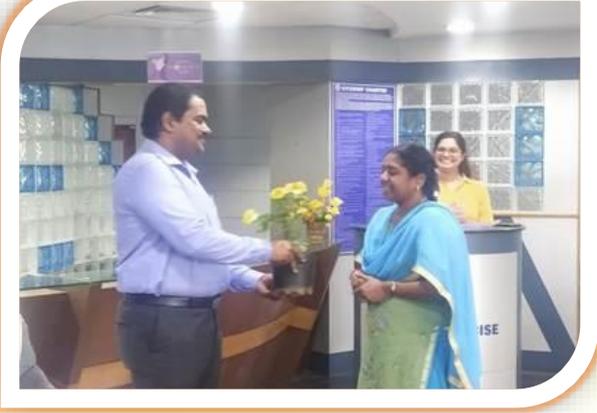
गणतंत्र दिवस समारोह 2020 के अवसर पर सभा को संबोधित करती हुई श्रीमती के. के. सुजा, अपर आयुक्त ।



गणतंत्र दिवस 2020 समारोह के दौरान उपस्थित श्री टी. नेडुमारन, सहायक आयुक्त, डॉ. आर. नटराजन, सहायक आयुक्त एवं अन्य अधिकारीगण ।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 2020 की एक झलक ।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 2020 की एक झलक ।



स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020 के दौरान सभा को संबोधित करते हुए डॉ. वी. संतोष कुमार, आयुक्त ।



स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020 के दौरान डॉ. वी. संतोष कुमार, आयुक्त, श्रीमती आर. गुलज़ार बेगम, संयुक्त आयुक्त, डॉ. एस. वडिवुक्करसी, उप आयुक्त एवं श्री टी. नेडुमारन, सहायक आयुक्त ।

# चेन्नई लेखा परीक्षा - II आयुक्तालय



सतर्कता जागरूकता दिवस 2019 ।

सतर्कता जागरूकता दिवस 2019 के अवसर पर शपथ लेते हुए अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ।



सतर्कता जागरूकता दिवस की एक झलक ।

# कोयंबतूर आयुक्तालय एवं कोयंबतूर अपीलस आयुक्तालय



सतर्कता जागरूकता दिवस 2019 के अवसर पर  
श्री राजेश सोढी, प्रधान आयुक्त एवं  
अन्य अधिकारीगण ।

सतर्कता जागरूकता दिवस 2019 के अवसर पर  
श्री राजेश सोढी, प्रधान आयुक्त एवं  
अन्य अधिकारीगण ।



महात्मा गांधी की 150 वी वर्षगांठ पर आयोजित  
कार्यक्रम का दृश्य ।



स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020 के दौरान परेड का  
निरीक्षण करते हुए श्री राजेश सोढी, प्रधान आयुक्त ।



# लेखा परीक्षा आयुक्तालय, कोरंबतूर



कोरोना जागरूकता अभियान 2020 के दौरान  
श्रीमती मिनू प्रमोद, आयुक्त एवं  
अन्य अधिकारीगण ।



कोरोना जागरूकता अभियान 2020 की एक झलक ।



कोरोना जागरूकता अभियान 2020 के दौरान हर्बल पाउच  
वितरित करती हुई श्रीमती मिनू प्रमोद, आयुक्त ।

# मदुरै आयुक्तालय



गणतंत्र दिवस समारोह 2020 के अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए श्री शिवकुमार, आयुक्त ।



स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020 के अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए श्री वी. पांडिराजा, संयुक्त आयुक्त ।



स्वच्छता अभियान 2019-20 के अवसर पर पुरस्कार वितरित करते हुए तत्कालीन आयुक्त श्री जे. एम. केन्नेडी एवं श्री वी. पांडिराजा, संयुक्त आयुक्त ।



हिंदी दिवस समारोह 2019 के अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. एस. प्रीति लता, सहायक प्राध्यापिका, लेडी डोक कॉलेज को सम्मानित करती हुई श्रीमती के. गुणसेल्वी, मुख्य लेखा अधिकारी एवं साथ में श्री वी. पांडिराजा, संयुक्त आयुक्त ।



हिंदी दिवस समारोह 2019 की एक झलक ।

# सेलम आयुक्तालय



महात्मा गांधी जी की 150 वीं वर्षगांठ पर दिनांक 18.9.2019 को आयोजित वाकेथान । श्रीमती ए.एस. मीनालोचनी, आयुक्त, सुश्री संगीता नेहरू, उप आयुक्त, श्री हनुमंत राजू, सहायक आयुक्त और अन्य अधिकारीगण ।

स्वच्छता कल्याण परियोजना – दिनांक 25.2.2020 को सरकारी कल्याण हास्टल की छात्राओं को नए बिस्तरों का प्रावधान - श्रीमती ए.एस. मीनालोचनी, आयुक्त ।



दिनांक 11.03.2020 को प्राकृतिक प्रस्तर एवं उत्पाद पैनल पर आयोजित आऊटरीच कार्यक्रम में श्रीमती ए.एस. मीनालोचनी, आयुक्त का भाषण । मंच पर श्री आर. वीरमणि, अध्यक्ष, प्राकृतिक प्रस्तर एवं उत्पाद पैनल, श्री बी. कनिष्कन, निदेशक (सेवा निवृत्त) भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण तथा श्री सिक्रिवाल, विदेश व्यापार विकास अधिकारी, जे.डी.जी.एफ.टी., कोयंबतूर ।

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020 के अवसर पर श्रीमती ए.एस. मीनालोचनी, आयुक्त का संबोधन ।



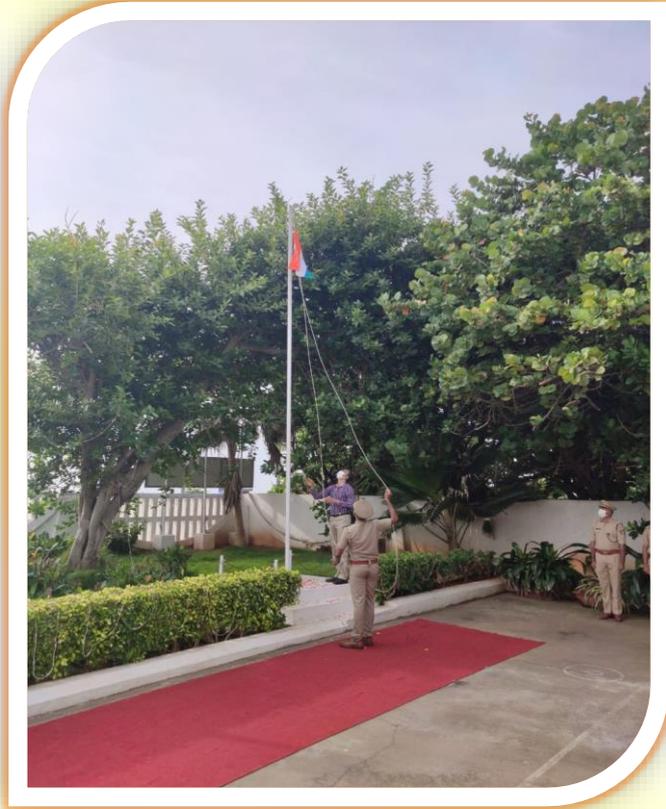
# पुदुच्चेरी आयुक्तालय



स्वतंत्रता दिवस 2020 के अवसर पर सुसज्जित कार्यालय भवन ।



पुदुच्चेरी के पुराने दीपस्तंभ के नवीयन के संबंध में आयुक्त, श्री जी. रवींद्रनाथ का प्रेस संवाद ।



स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020 के दौरान ध्वजारोहण करते हुए श्री एन. रामकुमार, संयुक्त आयुक्त ।

# तिरुच्चिराप्पल्लि आयुक्तालय



सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2019 के अवसर पर  
श्री जे. एम. केन्नेडी, आयुक्त, मुख्य अतिथि  
श्री यू. जयपाल, पुलिस अधीक्षक (सेवानिवृत्त) तथा  
अन्य अधिकारीगण ।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2019  
के दौरान मुख्य अतिथि श्री यू. जयपाल,  
पुलिस अधीक्षक (सेवानिवृत्त) का भाषण ।



स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020 के अवसर पर  
राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए डॉ. उमा शंकर,  
मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक),  
तिरुच्चिराप्पल्लि ।

# खेल के क्षेत्र में विशेष उपलब्धियां



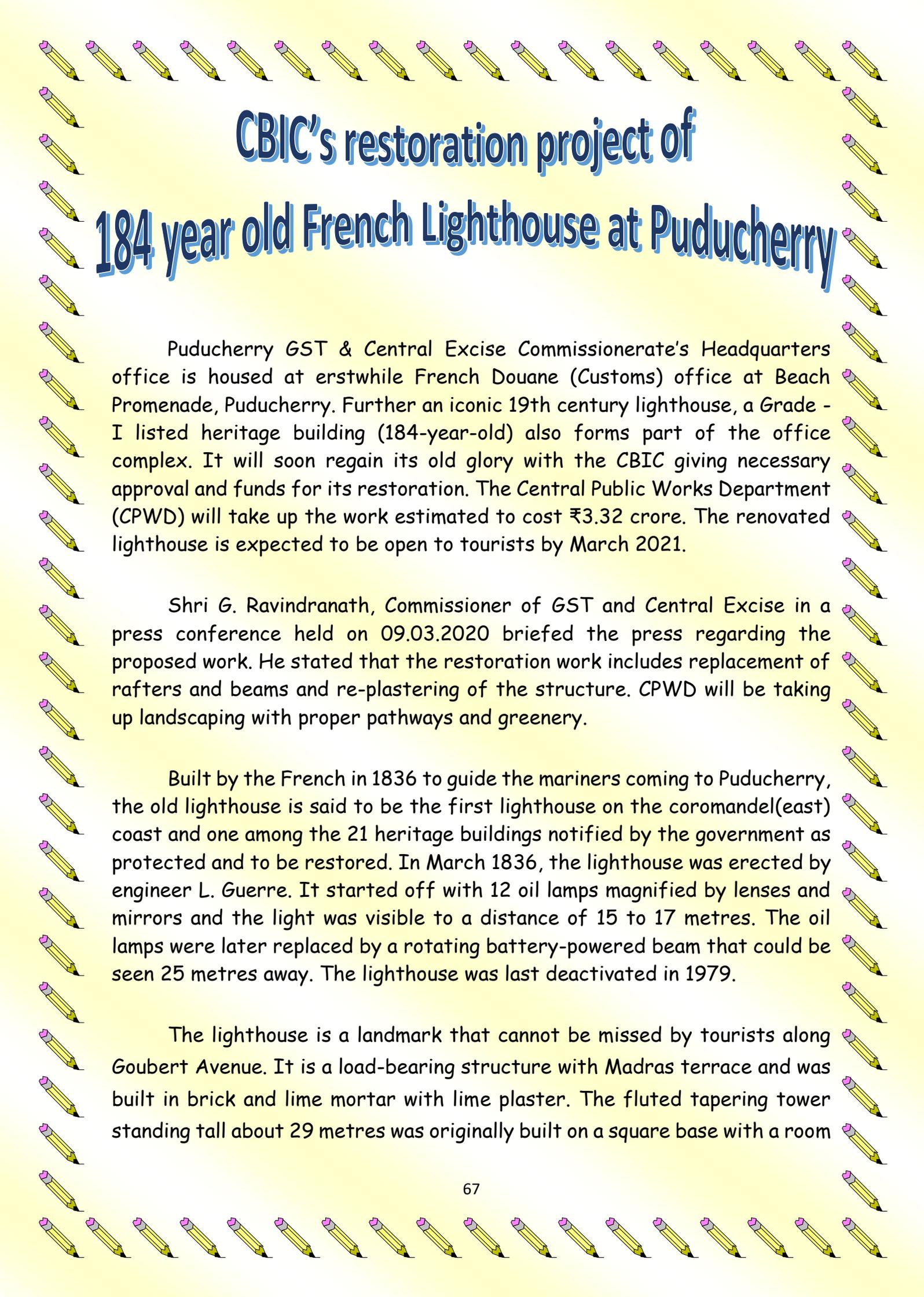
दिनांक 15 दिसंबर 2019 को त्रिपुनिथुरा, केरल में आयोजित अखिल भारतीय पूजा क्रिकेट टूर्नामेंट की विजेता माल और सेवा कर एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, चेन्नई की क्रिकेट टीम ।



ग्वान्गजू, दक्षिण कोरिया में आयोजित 18 वें एफ.आई.एन.ए. विश्व मास्टर्स चैंपियनशिप में कांस्य पदक विजेता (तैराकी में) श्री एन. अरविन्द, चेन्नई उत्तर आयुक्तालय ।



दिनांक 01.12.2020 – 10.12.2019 तक नेपाल में आयोजित साउथ एशियन गेम्स में (एथलेटिक्स में) रजत पदक विजेता श्री एस. एन. मुहम्मद सलालुद्दीन, कोयंबतूर आयुक्तालय एवं श्री जे. सुरेंद्र, चेन्नई उत्तर आयुक्तालय ।



# CBIC's restoration project of 184 year old French Lighthouse at Puducherry

Puducherry GST & Central Excise Commissionerate's Headquarters office is housed at erstwhile French Douane (Customs) office at Beach Promenade, Puducherry. Further an iconic 19th century lighthouse, a Grade - I listed heritage building (184-year-old) also forms part of the office complex. It will soon regain its old glory with the CBIC giving necessary approval and funds for its restoration. The Central Public Works Department (CPWD) will take up the work estimated to cost ₹3.32 crore. The renovated lighthouse is expected to be open to tourists by March 2021.

Shri G. Ravindranath, Commissioner of GST and Central Excise in a press conference held on 09.03.2020 briefed the press regarding the proposed work. He stated that the restoration work includes replacement of rafters and beams and re-plastering of the structure. CPWD will be taking up landscaping with proper pathways and greenery.

Built by the French in 1836 to guide the mariners coming to Puducherry, the old lighthouse is said to be the first lighthouse on the coromandel(east) coast and one among the 21 heritage buildings notified by the government as protected and to be restored. In March 1836, the lighthouse was erected by engineer L. Guerre. It started off with 12 oil lamps magnified by lenses and mirrors and the light was visible to a distance of 15 to 17 metres. The oil lamps were later replaced by a rotating battery-powered beam that could be seen 25 metres away. The lighthouse was last deactivated in 1979.

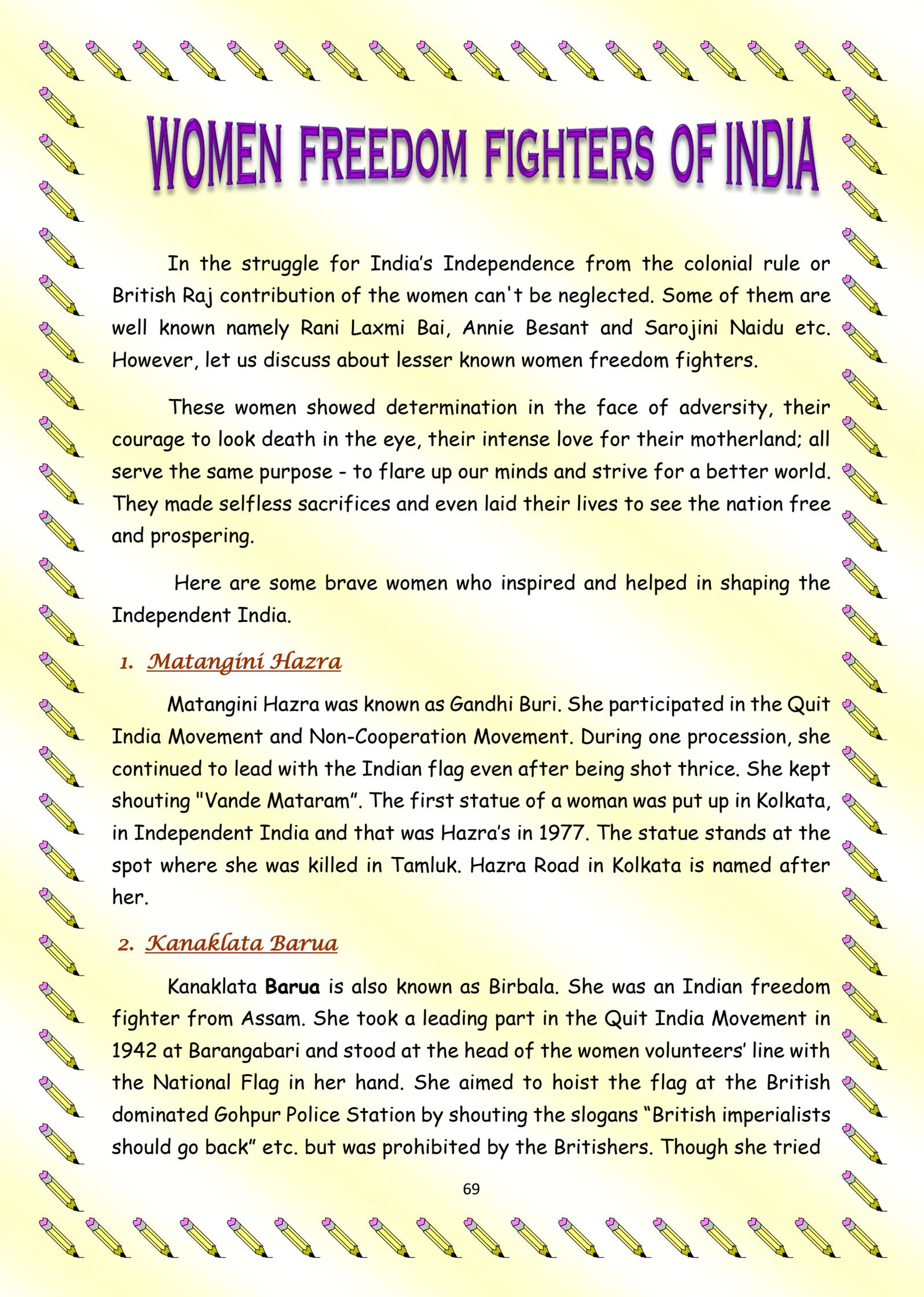
The lighthouse is a landmark that cannot be missed by tourists along Goubert Avenue. It is a load-bearing structure with Madras terrace and was built in brick and lime mortar with lime plaster. The fluted tapering tower standing tall about 29 metres was originally built on a square base with a room

for a watchman and an inner staircase. The upper storey with 218 wooden steps leading to the tower was added during the 20th century.

Shri G. Ravindranath, Commissioner further stated that once the restoration is complete the structure is going to be the pride of Puducherry and will be an added attraction on the Boulevard. He believed that anybody who visits Puducherry will make it a point to visit the lighthouse once it is restored to its old glory.

**R. Devanathan**  
Assistant Commissioner  
Puducherry Commissionerate





# WOMEN FREEDOM FIGHTERS OF INDIA

In the struggle for India's Independence from the colonial rule or British Raj contribution of the women can't be neglected. Some of them are well known namely Rani Laxmi Bai, Annie Besant and Sarojini Naidu etc. However, let us discuss about lesser known women freedom fighters.

These women showed determination in the face of adversity, their courage to look death in the eye, their intense love for their motherland; all serve the same purpose - to flare up our minds and strive for a better world. They made selfless sacrifices and even laid their lives to see the nation free and prospering.

Here are some brave women who inspired and helped in shaping the Independent India.

## 1. Matangini Hazra

Matangini Hazra was known as Gandhi Buri. She participated in the Quit India Movement and Non-Cooperation Movement. During one procession, she continued to lead with the Indian flag even after being shot thrice. She kept shouting "Vande Mataram". The first statue of a woman was put up in Kolkata, in Independent India and that was Hazra's in 1977. The statue stands at the spot where she was killed in Tamluk. Hazra Road in Kolkata is named after her.

## 2. Kanaklata Barua

Kanaklata Barua is also known as Birbala. She was an Indian freedom fighter from Assam. She took a leading part in the Quit India Movement in 1942 at Barangabari and stood at the head of the women volunteers' line with the National Flag in her hand. She aimed to hoist the flag at the British dominated Gohpur Police Station by shouting the slogans "British imperialists should go back" etc. but was prohibited by the Britishers. Though she tried



convincing that her intentions were noble, British police shot her with several other picketers and at the age of 18, she sacrificed her life for the country.

### 3. Aruna Asaf Ali

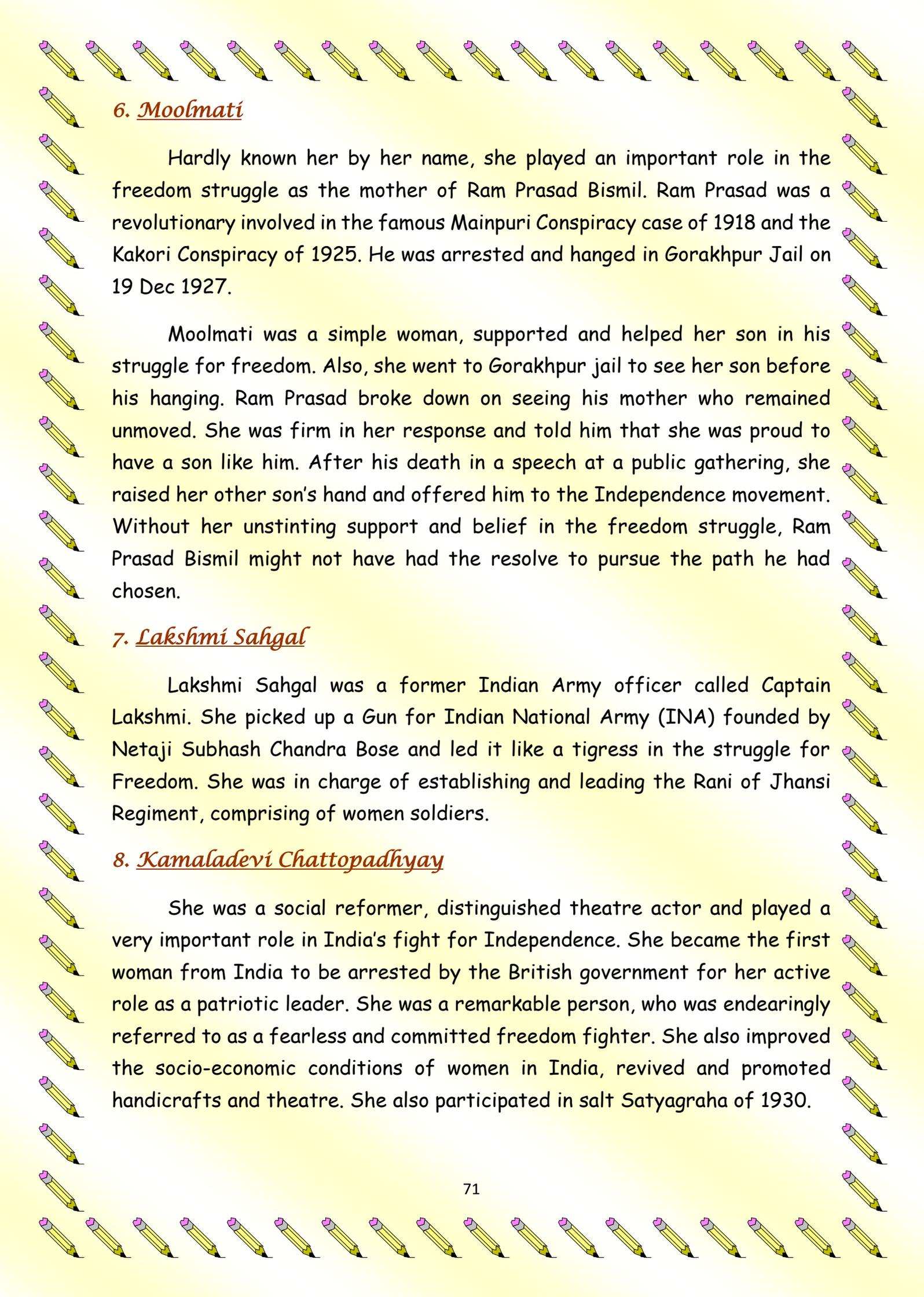
She is popularly known as 'The Grand Old Lady' of the Independence Movement. She was an Indian Independence activist and a freedom fighter who is best known for hoisting the Indian National Congress flag at the Gowalia Tank Maidan in Bombay (now Mumbai) during the Quit India Movement. She also took part in the Salt Satyagraha movement as well as other protest marches and was imprisoned. She organised political prisoners and protest against the ill-treatment given in the prisons by launching a hunger strike.

### 4. Bhikaiji Cama

An eminent personality of the Indian Nationalist Movement, she was born as Bhikaiji Rustom Cama on 24th September, 1861 in a Parsi family in Bombay (now Mumbai). Madam Cama came from a reputed family and her father Sorabji Framji Patel was a powerful member of the Parsi community. She emphasised on equality between men and women. She gave away all her assets to help out an orphanage for young girls. She travelled to Germany in 1907 to hoist the Indian National flag.

### 5. Tara Rani Srivastava

Tara Rani was born in a simple family in Saran, Bihar and got married to Phulendu Babu. They joined the Quit India Movement in 1942, regulated protests and planned to raise the Indian flag on the roof of the Siwan Police Station. They managed to gather a crowd and began their march towards the Siwan Police Station, shouting 'Inquilab'. When they were marching towards the Police Station, the police opened fire. Phulendu was hit and fell to the ground. Undeterred, Tara bandaged him with her sari and continued to lead the crowd towards the station shouting 'Inquilab' while holding the Indian flag. Her husband died, when Tara came back but she continued to uphold the freedom struggle.



## 6. Moolmati

Hardly known her by her name, she played an important role in the freedom struggle as the mother of Ram Prasad Bismil. Ram Prasad was a revolutionary involved in the famous Mainpuri Conspiracy case of 1918 and the Kakori Conspiracy of 1925. He was arrested and hanged in Gorakhpur Jail on 19 Dec 1927.

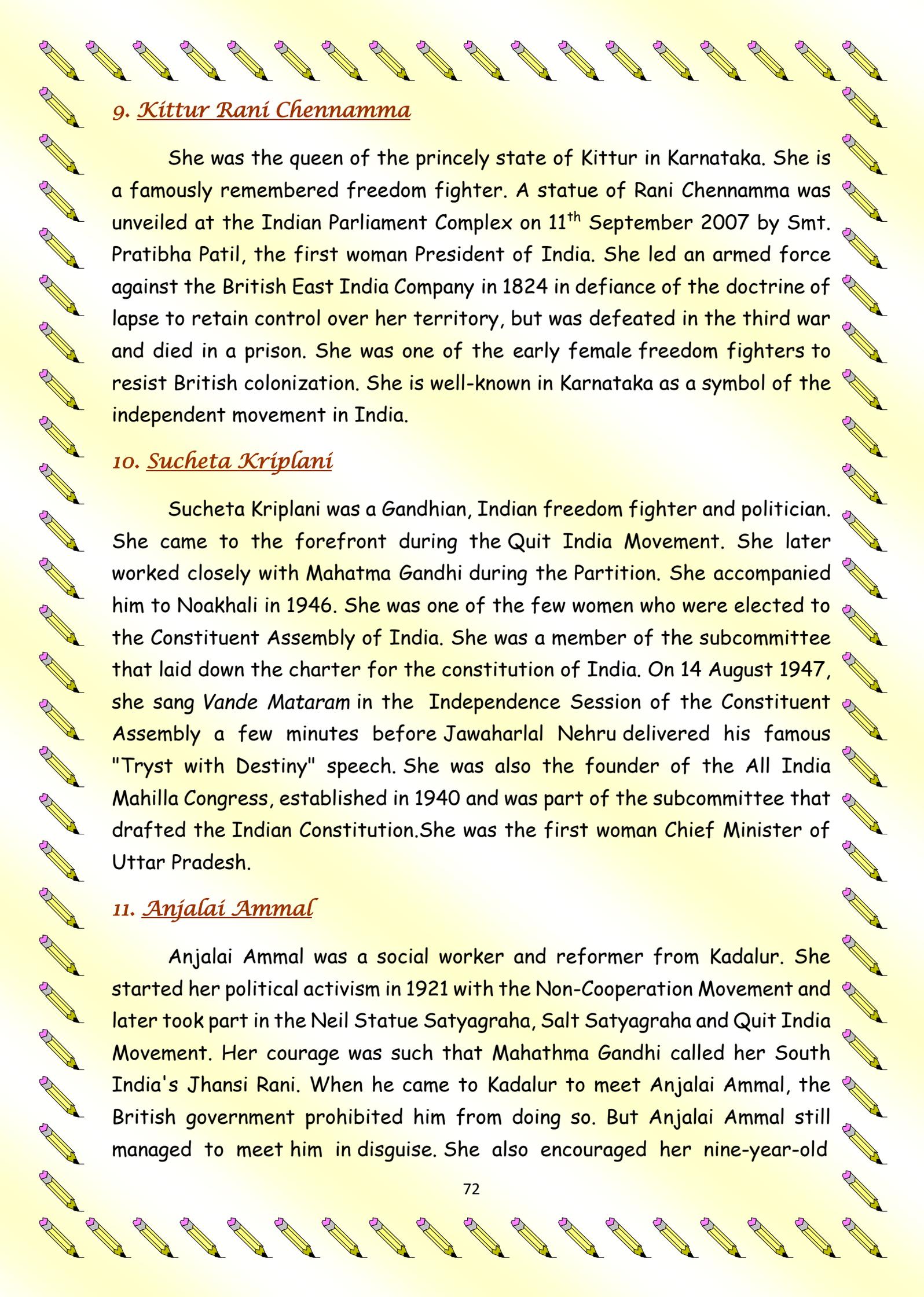
Moolmati was a simple woman, supported and helped her son in his struggle for freedom. Also, she went to Gorakhpur jail to see her son before his hanging. Ram Prasad broke down on seeing his mother who remained unmoved. She was firm in her response and told him that she was proud to have a son like him. After his death in a speech at a public gathering, she raised her other son's hand and offered him to the Independence movement. Without her unstinting support and belief in the freedom struggle, Ram Prasad Bismil might not have had the resolve to pursue the path he had chosen.

## 7. Lakshmi Sahgal

Lakshmi Sahgal was a former Indian Army officer called Captain Lakshmi. She picked up a Gun for Indian National Army (INA) founded by Netaji Subhash Chandra Bose and led it like a tigress in the struggle for Freedom. She was in charge of establishing and leading the Rani of Jhansi Regiment, comprising of women soldiers.

## 8. Kamaladevi Chattopadhyay

She was a social reformer, distinguished theatre actor and played a very important role in India's fight for Independence. She became the first woman from India to be arrested by the British government for her active role as a patriotic leader. She was a remarkable person, who was endearingly referred to as a fearless and committed freedom fighter. She also improved the socio-economic conditions of women in India, revived and promoted handicrafts and theatre. She also participated in salt Satyagraha of 1930.



### 9. Kittur Rani Chennamma

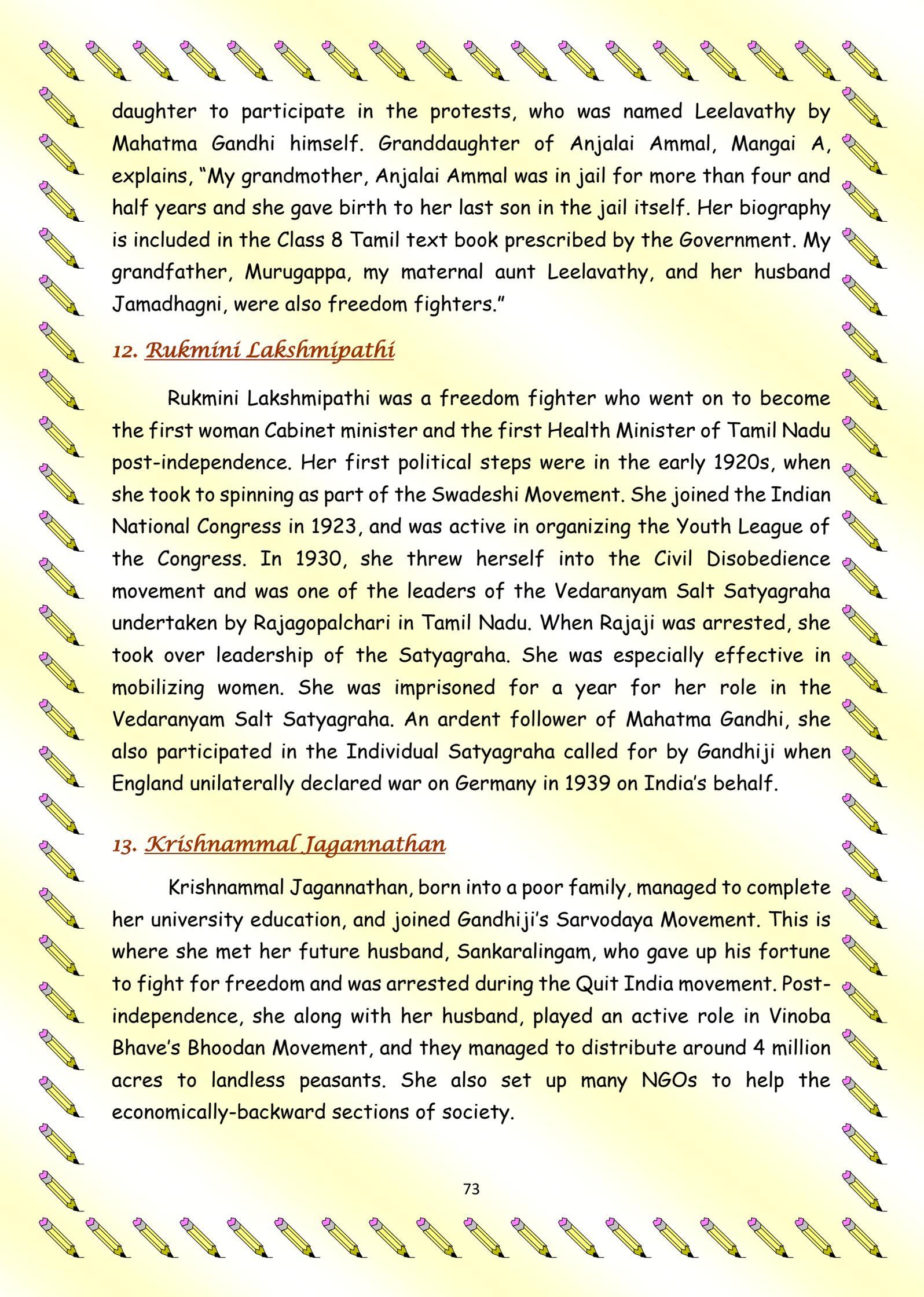
She was the queen of the princely state of Kittur in Karnataka. She is a famously remembered freedom fighter. A statue of Rani Chennamma was unveiled at the Indian Parliament Complex on 11<sup>th</sup> September 2007 by Smt. Pratibha Patil, the first woman President of India. She led an armed force against the British East India Company in 1824 in defiance of the doctrine of lapse to retain control over her territory, but was defeated in the third war and died in a prison. She was one of the early female freedom fighters to resist British colonization. She is well-known in Karnataka as a symbol of the independent movement in India.

### 10. Sucheta Kriplani

Sucheta Kriplani was a Gandhian, Indian freedom fighter and politician. She came to the forefront during the Quit India Movement. She later worked closely with Mahatma Gandhi during the Partition. She accompanied him to Noakhali in 1946. She was one of the few women who were elected to the Constituent Assembly of India. She was a member of the subcommittee that laid down the charter for the constitution of India. On 14 August 1947, she sang *Vande Mataram* in the Independence Session of the Constituent Assembly a few minutes before Jawaharlal Nehru delivered his famous "Tryst with Destiny" speech. She was also the founder of the All India Mahilla Congress, established in 1940 and was part of the subcommittee that drafted the Indian Constitution. She was the first woman Chief Minister of Uttar Pradesh.

### 11. Anjalai Ammal

Anjalai Ammal was a social worker and reformer from Kadalur. She started her political activism in 1921 with the Non-Cooperation Movement and later took part in the Neil Statue Satyagraha, Salt Satyagraha and Quit India Movement. Her courage was such that Mahathma Gandhi called her South India's Jhansi Rani. When he came to Kadalur to meet Anjalai Ammal, the British government prohibited him from doing so. But Anjalai Ammal still managed to meet him in disguise. She also encouraged her nine-year-old



daughter to participate in the protests, who was named Leelavathy by Mahatma Gandhi himself. Granddaughter of Anjalai Ammal, Mangai A, explains, "My grandmother, Anjalai Ammal was in jail for more than four and half years and she gave birth to her last son in the jail itself. Her biography is included in the Class 8 Tamil text book prescribed by the Government. My grandfather, Murugappa, my maternal aunt Leelavathy, and her husband Jamadhagni, were also freedom fighters."

### 12. Rukmini Lakshmipathi

Rukmini Lakshmipathi was a freedom fighter who went on to become the first woman Cabinet minister and the first Health Minister of Tamil Nadu post-independence. Her first political steps were in the early 1920s, when she took to spinning as part of the Swadeshi Movement. She joined the Indian National Congress in 1923, and was active in organizing the Youth League of the Congress. In 1930, she threw herself into the Civil Disobedience movement and was one of the leaders of the Vedaranyam Salt Satyagraha undertaken by Rajagopalchari in Tamil Nadu. When Rajaji was arrested, she took over leadership of the Satyagraha. She was especially effective in mobilizing women. She was imprisoned for a year for her role in the Vedaranyam Salt Satyagraha. An ardent follower of Mahatma Gandhi, she also participated in the Individual Satyagraha called for by Gandhiji when England unilaterally declared war on Germany in 1939 on India's behalf.

### 13. Krishnammal Jagannathan

Krishnammal Jagannathan, born into a poor family, managed to complete her university education, and joined Gandhiji's Sarvodaya Movement. This is where she met her future husband, Sankaralingam, who gave up his fortune to fight for freedom and was arrested during the Quit India movement. Post-independence, she along with her husband, played an active role in Vinoba Bhave's Bhoodan Movement, and they managed to distribute around 4 million acres to landless peasants. She also set up many NGOs to help the economically-backward sections of society.

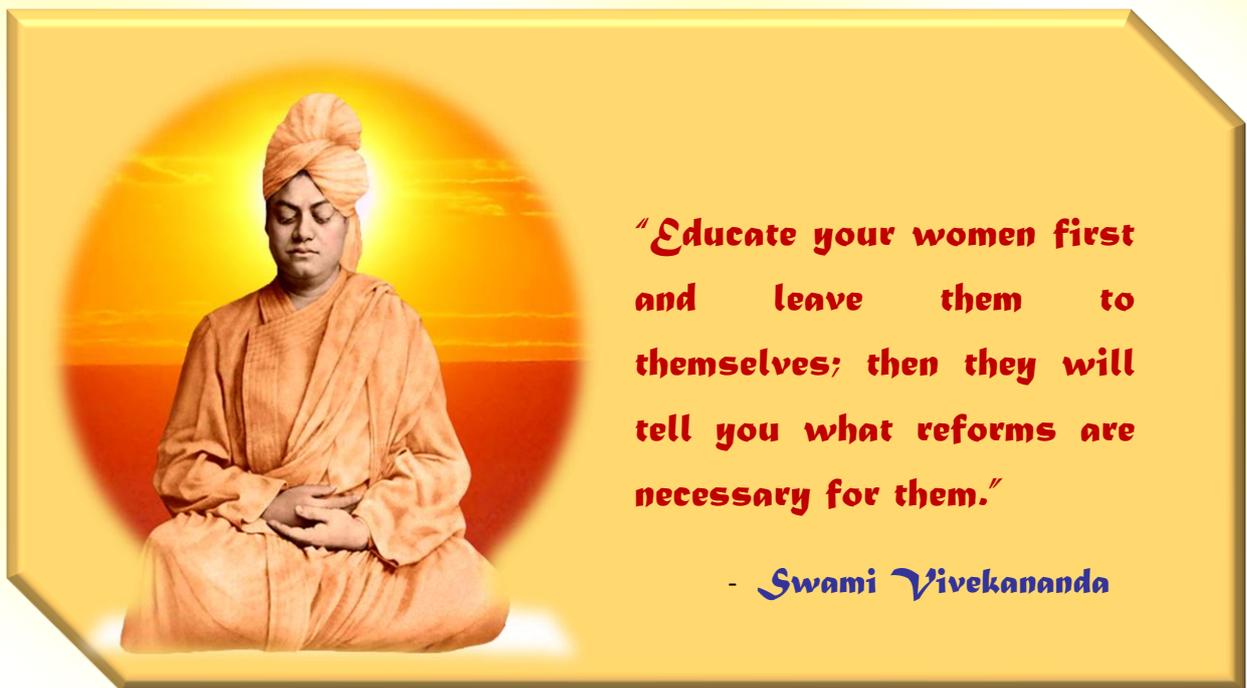
#### 14. Ambujammal Desikachari

Ambujammal Desikachari was a freedom fighter and women's rights activist. Her entry into political life was in 1930, during the civil disobedience movement. As a Gandhian, she participated in the Civil Disobedience Movement and served as Vice-President of the Tamil Nadu Congress Committee. She, along with several women donated jewellery to support the national movement - on Gandhiji's request. She was a strong proponent of Swadeshi, and embraced Khadi. She joined the Salt Satyagraha, and courted arrest. In 1932, she led the Satyagrahis to boycott foreign cloth. She was arrested and sentenced to six months of imprisonment. The issues that she focused on were Abolition of Child Marriage, Polygamy, and the Devadasi system; and bringing about legislation to protect the rights of women and their property rights. Ambujammal was awarded the Padma Shri in 1964. She died in 1993.

These women freedom fighters are an inspiration to us.

N. Deepika  
Inspector

Chennai South Commissionerate



# HATE TO BE LOVED

You were the interpretation of ideal,  
And I could never stop loving you  
For I was besotted by you.  
The farther you were, the more I wanted you.  
And like the world I concealed,  
Concealed from hate.  
I thought I would be firm enough in hating you.  
But I was broken, by the betrayal of my heart.  
Not knowing how to let go,  
The more I try to hate, the more I end up loving you.  
Maybe I was selfish of my fears.  
The fear that you would not stay long.  
The fear that you would suddenly disappear into the stars and never return.  
And the pain of being broken.  
But the truth is, I cannot even try to hate you,  
Because I love you beyond the world and through eternity...

**K. Thiruvenkatalakshmi**  
Administrative officer  
Chennai Audit-I Commissionerate



*P. Rukmini*  
Senior P.S  
Pr.CCO, Chennai

# UNDERSTAND THE FEELINGS OF OTHERS



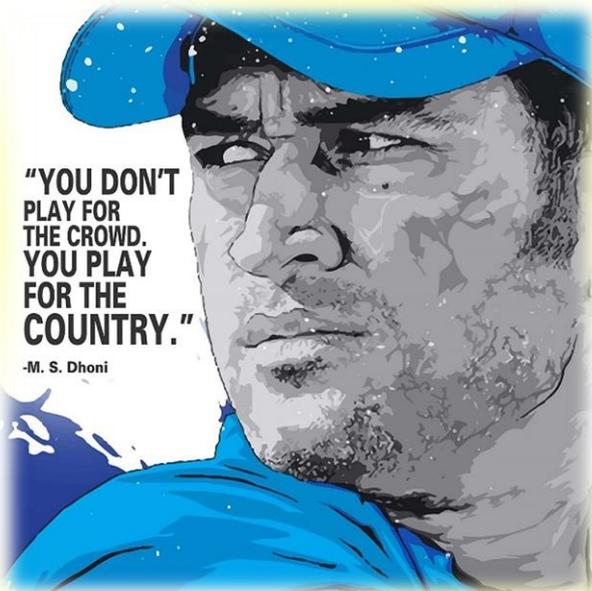
Once upon a time, in a village there lived a good couple. They were very poor. They worked hard, day and night, but could not earn enough money for their living. One day the lady gave birth to a baby boy. They were happy as well as worried. First, they were happy because a new person has entered their lives. They were sad and worried because their earnings weren't enough for themselves and now a baby boy was born, they have to work even harder than before to raise the child. Somehow, they managed. After a few days, they were able to save a small amount of money. They were happy. The child started to grow up and became 10 years old. The parents were happy because their child was good at studies and was always a favorite of his teachers. But he had a bad habit of always spending money. Daily and regularly, his parents would give ₹10/- to him and ask him to enjoy, with the given amount of money. The parents showed so much of love on him, so the boy never saw his parents' pain and hard efforts.

One day, the boy was very happy as all his exams were over. The vacation started on that day. Every day he would play with his friends and enjoy his time. On that day he decided to go to his parents' work place. He went there secretly. His parents had told him that, he should not come to their work place as they did not want their pain and suffering to be seen by their child. But on that day, he didn't obey his parents' words and he went there. He saw his parents working hard under the hot, boiling sun. He realized how much money he had spent and enjoyed himself. He also realized that his parents never enjoyed their life. From that day onwards, he started to save money, which his parents gave. Later, in the future, he was very happy, that he had saved more than ₹1000/-. Because of his sharp brain, he got scholarship and admission in a very good college. He got an excellent job and bought a big house, in which he made his parents happier than ever before.

**M. Vaishnavi**  
D/o. Shri R. Mohan  
Superintendent  
Pr. CCO, Chennai

# MSD - THE NAME & TITLE IN ONE

*An Ode to M.S.Dhoni, the man with a Midas Touch, on his retirement*



"YOU DON'T  
PLAY FOR  
THE CROWD.  
YOU PLAY  
FOR THE  
COUNTRY."

-M. S. Dhoni

The Best Closer & the Best Captain of Indian Cricket announced his retirement too in style..just as he finishes off the game in style - On an Independence Day @19:29 hrs!!

No pomp, no mikes, no glittering flood lights or the roars of crowd. Just as the day of National Importance was coming to a close, without stealing the thunder away, announces poignantly with a simple "Thanks" & a video clip, as calmly as the MAN himself.

MS, you have been on National Duty for a long time (strikes a chord? remember, these words of him??) & what better day to say adieu than ToDay!!

Many Cricketing Legends come & go.. but there'll be no better Closer / Finisher than you. You believed more in the process of achieving results than the results itself!! You are the embodiment of resilience, team spirit, handling critical situations calmly, remaining grounded both during the win & loss and letting juniors take the limelight during the victorious moments. You lived by example.

Mahi, YOU made us all proud, You brought immense laurels, You held the Nation in your Heart, You rewrote the history of Indian Cricket & You ignited the dreams of the GenNext. And, WE will cherish YOU, wear You in our sleeve & keep celebrating You forever. 'Dhoni' isn't just a name; it's an emotion to us Indians.

Good-byes are never easy but you have given us a lot to rejoice & be proud of. And it is time, we let you have your well-deserved retirement & bid adieu.

Thank you, Legend, for all the great moments!! The memories you gave us retire!! Happy Retirement!!

**Priyadharshini Madhavan**  
Administrative Officer  
Pr.CCO, Chennai



# I AM MUTABLE

My feelings are flowing down,  
like how the water washes  
away the dirt that stuck on you,  
after merrily playing in the mud.

Oh rain, why have you come?  
Go away and bring back the Sun.

My emotions are vaporizing,  
like how the heat evaporates  
the dew that forms on you,  
after a pleasant, chilly dawn.

Oh Sun, why do you glow?  
Go away and bring me the snow.

New memories accumulate in me,  
like how the white icy flakes  
settle consistently on you,  
during a cold winter night.

I am done asking for change,  
Now rest is what I crave.  
Can nothing be constant here?  
I wonder.

The Autumn shall tell,  
when the leaf would wither,  
turning brown and lifeless.  
When it falls, peace'll be there.



**Padmapriya V.**  
Tax Assistant  
Pr.CCO, Chennai

# Ambiguity (a reverse poetry)

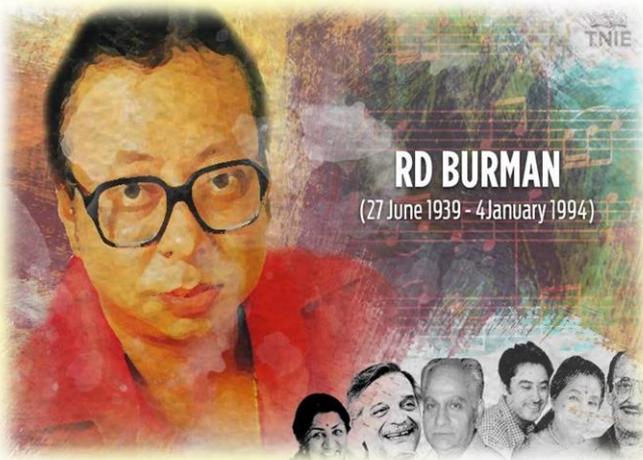
Life isn't fair.  
So one can't always say,  
everything happens for the  
best.  
You never know what may come,  
but  
expect the worst in life.  
Stay positive and never  
having regrets, is stupid.  
Life will teach hard lessons, but  
Sometimes it may get  
unbearable,  
thinking it's time to quit.  
It may sometimes help, to go on  
But the utmost truth is,  
Life is absolutely cruel, they say.



**Aaditya**  
Tax Assistant  
Pr.CCO, Chennai



# REMEMBERING THE INIMITABLE TUNESMITH



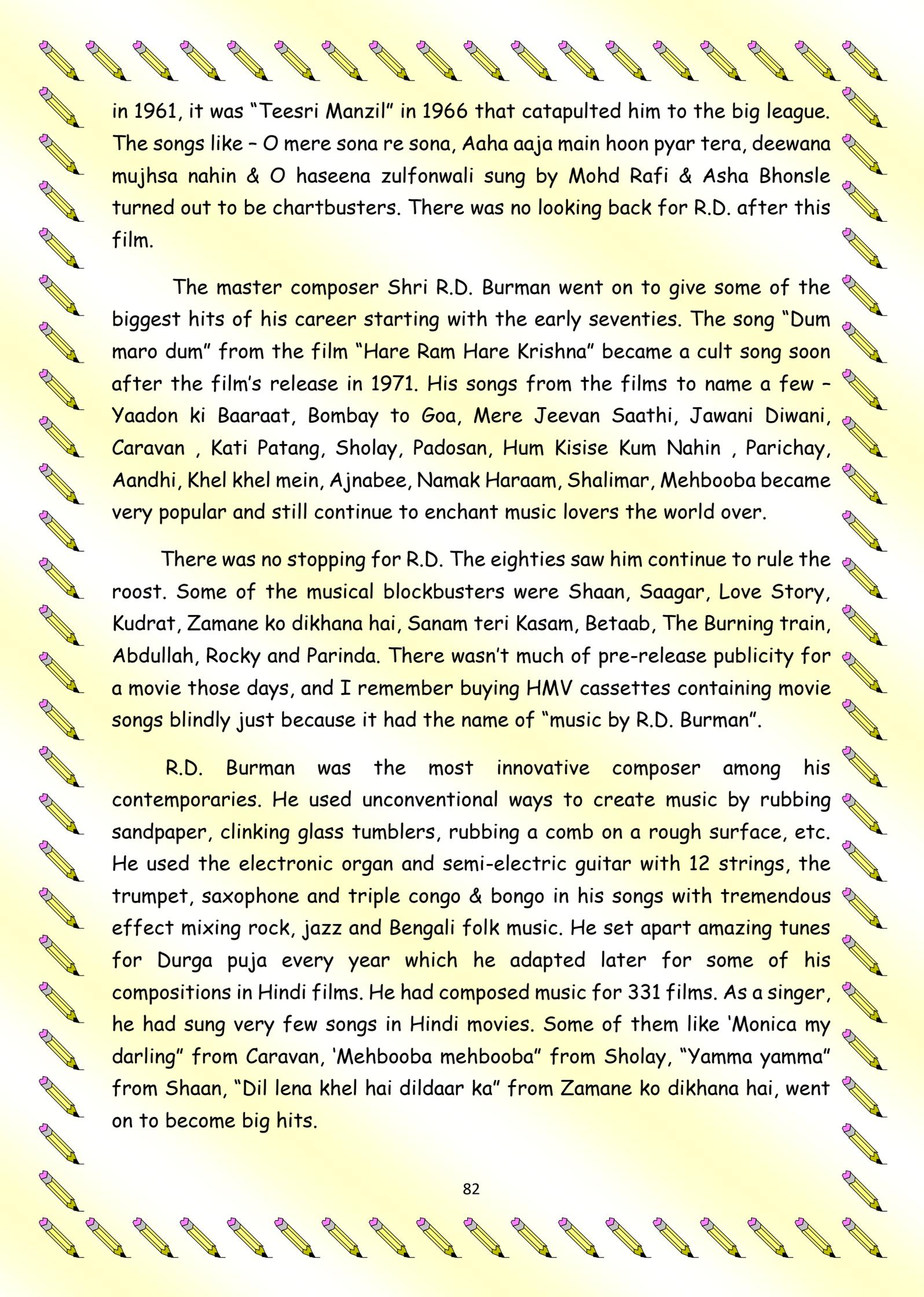
Listening to one's favourite music is one of the best ways to relax / unwind. It can have a soothing effect on the body, mind and soul of a person. It is indeed a great stress buster. Further, it enhances one's mood. In other words, one can experience all types of emotions like happiness,

sadness, excitement, etc depending on the music that is being played. There are different types of music ranging from classical, western, folk, instrumental, etc. And an individual's likes and dislikes differ in this regard. Some may love classical music, while for some it may be western music, and it goes on. Right from my childhood, I took an instant liking for film songs.

This new year 2020 brought in its wake the COVID-19 pandemic, which resulted in 'Lockdown' in different parts of the country from 24th March onwards. This forced everybody to stay indoors. By staying at home the only options left to spend time was watching TV, internet, whatsapp, you tube and reading. Being a music lover, I found solace in listening to music.

While browsing channels, I got hooked to one of the programmes that was being aired remembering the legendary music composer the late Shri R.D. Burman widely known as Panchamda. I just took a journey down memory lane to my childhood days in the late seventies and early eighties.

My all-time favourite music composer Shri Rahul Dev Burman, was born on 27<sup>th</sup> June, 1939 to the famous composer S.D. Burman and Meera Dasgupta at Calcutta and he had his early education in West Bengal. Though R.D. Burman made his debut in the world of film music with "Chhote Nawab"



in 1961, it was "Teesri Manzil" in 1966 that catapulted him to the big league. The songs like - O mere sona re sona, Aaha aaja main hoon pyar tera, deewana mujhsa nahin & O haseena zulfonwali sung by Mohd Rafi & Asha Bhonsle turned out to be chartbusters. There was no looking back for R.D. after this film.

The master composer Shri R.D. Burman went on to give some of the biggest hits of his career starting with the early seventies. The song "Dum maro dum" from the film "Hare Ram Hare Krishna" became a cult song soon after the film's release in 1971. His songs from the films to name a few - Yaadon ki Baaraat, Bombay to Goa, Mere Jeevan Saathi, Jawani Diwani, Caravan , Kati Patang, Sholay, Padosan, Hum Kisise Kum Nahin , Parichay, Aandhi, Khel khel mein, Ajnabee, Namak Haraam, Shalimar, Mehbooba became very popular and still continue to enchant music lovers the world over.

There was no stopping for R.D. The eighties saw him continue to rule the roost. Some of the musical blockbusters were Shaan, Saagar, Love Story, Kudrat, Zamane ko dikhana hai, Sanam teri Kasam, Betaab, The Burning train, Abdullah, Rocky and Parinda. There wasn't much of pre-release publicity for a movie those days, and I remember buying HMV cassettes containing movie songs blindly just because it had the name of "music by R.D. Burman".

R.D. Burman was the most innovative composer among his contemporaries. He used unconventional ways to create music by rubbing sandpaper, clinking glass tumblers, rubbing a comb on a rough surface, etc. He used the electronic organ and semi-electric guitar with 12 strings, the trumpet, saxophone and triple congo & bongo in his songs with tremendous effect mixing rock, jazz and Bengali folk music. He set apart amazing tunes for Durga puja every year which he adapted later for some of his compositions in Hindi films. He had composed music for 331 films. As a singer, he had sung very few songs in Hindi movies. Some of them like 'Monica my darling" from Caravan, 'Mehbooba mehbooba" from Sholay, "Yamma yamma" from Shaan, "Dil lena khel hai dildaar ka" from Zamane ko dikhana hai, went on to become big hits.

He got his first Filmfare award for "Sanam Teri Kasam." Though R.D. Burman missed getting the National Award, his compositions like "Kya hua tera vaada" from the film "Hum Kisise Kum Nahin" fetched the National Award for the great Mohammed Rafi, 'Humein tumse pyar hai kitna" from the film 'Kudrat' for the classical singer Parveen Sultana and "Mera kuchh saaman" from the film "Ijaazat" for the best singer and lyricist namely Asha Bhonsle and Gulzar. He proved that he was at ease with classical songs also and some of them like "Mere naina sawan bhadon" from the film "Mehbooba", "Raina beeti jaaye" by Lata Mangeshkar from the film "Amar Prem" where he combined semi classical Hindustani music with guitar. Both the songs became a rage. Most of R.D. Burman's songs were immortalised by the versatile Kishore Kumar and they continue to be popular even today.

It was an irreparable loss for the Music world with the passing away of R.D. Burman on 4<sup>th</sup> January, 1994. He signed off with the greatest hit songs of the decade. Songs from the film "1942 - A love story". R.D. Burman didn't live to see that happen. Though the inimitable tunesmith is no more, for me and so many other music lovers he continues to live in our hearts through his songs and remains an inspiration to many a budding music director in the film industry.

**E.V. Pramod**  
Senior Translation Officer  
Pr.CCO, Chennai



# ஜிஎஸ்டி சட்ட மற்றும் நடைமுறையில் எதிர்கொண்ட சில

## சிக்கல்கள் மற்றும் அதற்கான தீர்வுகள்:

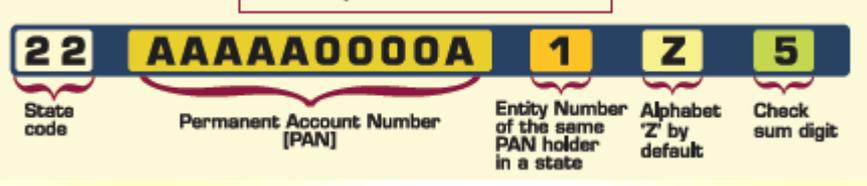
நம் நாட்டில் சரக்கு மற்றும் சேவை வரி அறிமுகப்படுத்தப்பட்டு மூன்று ஆண்டுகள் கடந்துவிட்டது. மத்திய கலால், சுங்க மற்றும் சேவை வரி போன்ற மறைமுக வரிச் சட்டத்தில் பல்வேறு மாற்றங்கள் மற்றும் சீர்திருத்தங்கள் கடந்த 30-40 ஆண்டுகளில் மேற்கொள்ளப்பட்டாலும், "சரக்கு மற்றும் சேவை வரி" என்னும் மாபெரும் நிதி சீர்திருத்தம் கொண்டு வரப்பட்டது சுதந்திர இந்தியாவில் முக்கியத்துவம் வாய்ந்த ஒன்றாகும். "ஒரு நாடு ஒரு வரி" என்ற இலக்கோடு ஜிஎஸ்டி சட்டம் மற்றும் நடைமுறைகளை வடிவமைப்பதற்கான சீர்திருத்தத்தின் சிறந்த பகுதி என்னவென்றால், வர்த்தகர்கள் மற்றும் பயனீட்டாளர்கள் இந்த புதிய நடவடிக்கையை ஏற்றுக்கொண்டது மற்றும் பொறுமையாக தங்களை இந்த புதிய நடைமுறைக்கு மாற்றிக்கொண்டது உண்மையில் சிறந்ததொரு நிகழ்வாகும். இந்த வருடம் மார்ச் மாதத்தில் இருந்து தற்போது வரை உற்பத்தியாளர்களுக்கும், வர்த்தகர்களுக்கும் கொரோனா எனும் சர்வதேச பரவல் நோயை தேசம் எதிர்கொள்வதால் அவர்களின் தொழில் கடுமையாக பாதிக்கப்பட்டுள்ளது. இவற்றை கருத்தில் கொண்டு அரசும் சிறு வணிகர்கள், சிறு தொழில் முனைவோர் (5 கோடிக்கு குறைவான விற்றுமுதல் உள்ளவர்கள்) மார்ச் முதல் மே மாதம் வரையிலான வரிக்குண்டான செலுத்த வேண்டிய வட்டியையும், லேட் பீஸையும் சூன் 30 வரை தள்ளுபடி செய்துள்ளது. கடந்த GST கவுன்சில் மீட்டிங்கில் இந்த சலுகையை மேலும் செப்டம்பர் மாதம் 30 வரை நீடித்து உள்ளது. லாக்டெளன் சமயத்திலும் அரசு வழிகாட்டுதல்படி, வரி செலுத்துவோர் துயரை பகுதியேனும் நீக்க, அவர்களின் ரீபண்ட் தாக்கல் உடனடியாக பரிசீலிக்கப்பட்டு பல்லாயிரம் கோடி ரூபாய் GST ரீபண்ட் அவர்களின் வங்கி அக்கவுண்டுகளுக்கு அனுப்பப்பட்டது. இது காலத்தே செய்த உதவியாக இருந்தது என்று பலரும் வரவேற்றுள்ளனர்.

வர்த்தகத்தாரிடையே எழக்கூடிய சந்தேகங்களை களைவது மற்றும் தெளிவுபடுத்துவது துறைசார் அலுவலர்களாகிய எங்களது கடமையாகும். இந்த "சரக்கு மற்றும் சேவை வரி"யானது தேசமனைத்திற்கும் பொதுவானதால் வரி செலுத்துவோர் மத்தியில் ஒரு குறிப்பிட்ட அளவு ஒழுங்கு மற்றும் கட்டமைப்பு தேவைப்படுகிறது. இந்த கட்டுரையில் தற்போதுள்ள நடைமுறைகளில் ஏற்பட்ட சிக்கல்களும் சட்டத்திலிருந்து அதற்கான சாத்தியமான தீர்வுகளை வழங்குதல் பற்றிய ஒரு புரிதலாக பார்க்கலாம்.

"சரக்கு மற்றும் சேவை வரி" அமல்படுத்தப்பட்ட நேரத்தில், வரி செலுத்துவோருக்கு ஜிஎஸ்டி செலுத்துவதில் இருந்து விலக்கு அளிக்கப்பட்ட வரம்பு ரூ. 20 லட்சம் ஆகும். சிறு வணிகர்களுக்கு ஜிஎஸ்டி கவுன்சில் 1.4.2019 முதல் சரக்கு மற்றும் சேவை வரி செலுத்துவதில் இருந்து விலக்கு அளிப்பதற்கான வரம்பை இரட்டிப்பாக்கி ரூபாய் 40 லட்சமாக உயர்த்தியது. இந்த விலக்கு அளிக்கப்பட்டது, சிறு தொழில் மற்றும் சேவை புரிவோர் குறைவான விற்றுமுதல் இருந்தால் "சரக்கு மற்றும் சேவை வரி" செலுத்த வேண்டியது இல்லை; அதனால் சிறுதொழில் வளர்ச்சி பெரும் என்ற நோக்கில் கொண்டு வரப்பட்டது. எனினும் இந்த விலக்கை சில வணிகர்களும் தொழில் முனைவோரையும் தவறான வழியில் சிந்திக்க வைத்து விட்டது. அவர்கள் "சரக்கு மற்றும் சேவை வரி" GST பில்களுக்கு மட்டும் இந்த உச்ச வரம்பு என்று நினைத்து GST பில் விற்றுமுதல் 40 லட்சங்களுக்குள் இருந்தால் வரி செலுத்த வேண்டியது இல்லை என்று தவறாக புரிந்து கொண்டுள்ளனர். GST உரிமம் இருந்தாலே அவர் விற்றுமுதல் பொருட்டின்றி GST செலுத்த வேண்டும். மேலும் வாங்குபவர் GST உரிமம் இருந்தால் மட்டுமே GST வரி செலுத்த வேண்டும் என்றும் மற்ற உரிமம் இல்லாத பயனீட்டாளர் வாங்கும் போது GST வரி செலுத்த வேண்டியதில்லை என்பதும் தவறான புரிதலே ஆகும். GST உரிமம் இருந்தாலே பெறுபவர் GST உரிமம் உள்ளவரா இல்லையா என்பது கேள்வி இல்லை, பொருள் மற்றும் சேவைக்கு உண்டான GST வரி செலுத்தப்பட வேண்டும்.

தற்போதைய விதி முறைகளின்படி மூன்று மாத GST ரிட்டர்ன் தாக்கல் செய்யாதவர்களின் GST உரிமம் அதிகாரிகளால் ரத்து செய்யப்படுகிறது. அப்படி தவறிய GST உரிமம் பெற்றவர் அந்த அசல் உரிமத்தை மீட்கும் ஆவணத்தை சமர்ப்பிக்க வேண்டும். ஆனால் சில தவறான புரிதல்களால் அப்படிப்பட்ட சிலர் GST உரிமம்

வேண்டி புதிய விண்ணப்பத்தை தாக்கல் செய்கிறார்கள். GST உரிமம் 15 எங்களை கீழ்க்கண்டவாறு கொண்டது



மேற்படி உள்ள 13ம் கட்டம் முக்கியத்தயுவம் வாய்ந்ததாகும். இது அந்த விண்ணப்பதாரர் எத்துணை GST உரிமம் அந்த மாநிலத்தில் வைத்துள்ளார் என்பதை காண்பிக்கும். ஏற்கனவே ஒரு உரிமம் ரத்து செய்யப்பட்டதால் அந்த 13ம் இலக்கம் 2 என்று ஒதுக்கீடு செய்யப்படும். எனவே சட்டத்தில் உள்ள வழிமுறைகளை பின்பற்றி சரியான வகையில் உரிமம் பெற்று அதனை காலாவதி ஆகாமல் பார்த்துக்கொள்ள வேண்டும். மேலும் அரசு இதன் பொருட்டு RoD (Removal of Difficulty) 25.6.2020 தேதியிட்டு ஆணையில் 10.8.2020 வரை ரத்து செய்யப்பட்டு மீட்கவும் முடியாத ஆணை பிறப்பிக்க பட்டவர்கள் மேல் முறையீட்டிற்கு செல்ல வேண்டிய அவசியமின்றி மீண்டும் மீட்பு ஆவணத்தை online ல் பதிவேற்றும் வசதியை ஏற்படுத்தி உள்ளது.

தற்போதுள்ள ஜிஎஸ்டிஆர்-3பி, ஜிஎஸ்டிஆர் 1 மற்றும் ஜிஎஸ்டிஆர் 2A ரிட்டர்ன்கள் ஒரு புதிய வடிவிலான ரிட்டர்னாக மாற்றப்பட உள்ளது. இது முதலில் ஏப்ரல் 2020 இல் வெளியிட திட்டமிடப்பட்டிருந்தது, ஆனால் அது 2020 அக்டோபருக்கு ஒத்திவைக்கப்பட்டுள்ளது. தற்போது, வரி செலுத்துவோர் எதிர்கொள்ளும் சில சிக்கல்கள் இன்றி நேர்த்தியாக உள்விவரங்கள் அடங்கிய இந்த புதிய ரிட்டர்ன் தாக்கல் வடிவமைக்கப்பட்டுள்ளது. தற்போதைய சிஜிஎஸ்டி விதிகள், 2017 இன் விதி 36 (4) ன் படி, ஜிஎஸ்டிஆர் -2 ஏ ல் இல்லாத கொள்முதலுக்கு உள்ளீட்டு வரி 10% அளவிற்கு மட்டுமே கோர முடியும். எனவே, ஜி.எஸ்.டி.ஆர் -3 பி-யில் கோரக்கூடிய மொத்த ஜி.டி.சி ஒரு குறிப்பிட்ட காலகட்டத்தின் ஜி.எஸ்.டி.ஆர் -2 ஏவில் தோன்றும் தகுதியான ஜி.டி.சி யில் 110% ஆகும். ஜிஎஸ்டிஆர் 2 ஏ வழியாகச் சென்ற பிறகு, வரி செலுத்துவோர் உள்ளீட்டு வரி மற்றும் ஜிஎஸ்டி மூலம் செலுத்த வேண்டிய ஜிஎஸ்டி அளவை நிர்ணயிக்கிறது. இந்த நடைமுறையில் சிலருக்கு ஏற்படும் குறைபாடு என்னவெனில், வரி செலுத்தாத தயாரிப்பாளர் ரிட்டர்ன் தாக்கல் செய்ய வேண்டிய நாள் கழித்து வரி செலுத்தி தாக்கல் செய்தால், அது வரி செலுத்துபவரின் அந்த மாத கணக்கில் உள்ளீட்டு வரியாக உபயோகிக்க இயலாது. சிலருக்கு இந்த

உள்ளீட்டு வரி அந்த மாதத்தில் எடுக்க முடியாவிட்டால் காலாவதி ஆகி விடுமோ என்று சந்தேகம் உள்ளது. ஆனால் அவ்வாறு தாமதமாக செலுத்திய உள்ளீட்டு வரியை அவர்கள் அடுத்த மாதத்தில் ரிட்டர்ன் தாக்கல் செய்யும் பொழுது எடுத்து உபயோகப்படுத்திக்கொள்ளலாம்.

உற்பத்தியாளர்/பொருள் வழங்குபவர் ஜி.எஸ்.டி.ஆர் 1 தாக்கல் செய்தவுடன் வரி செலுத்துபவர் GSTR 2A வில் உடனடியாக வரவு வைக்கப்படாது. சில சந்தர்ப்பங்களில், வரி செலுத்துவோர் ஒரு குறிப்பிட்ட விலைப்பட்டியலைப் பதிவேற்றத் தவறியிருப்பார், அசாதாரண சந்தர்ப்பங்களில், சில வரி செலுத்துவோர் ஒரு விலைப்பட்டியலை ஜி.எஸ்.டி.ஆர் 1 வருமானத்தில் ரத்து செய்திருப்பதைக் காட்டியிருக்கலாம். ஆனால் இதற்குண்டான பொருள் வழங்கப்பட்ட தொகையை பயனீட்டாளரிடமிருந்து வசூல் செய்திருப்பார். இத்தகைய சந்தர்ப்பங்களில் தவறை சரிசெய்ய முடியவில்லை என சில வரி செலுத்துவோர் தெரிவித்தனர். அத்தகைய சிக்கலுடன் வந்தபோது, அவர்களை அடுத்த மாத ஜி.எஸ்.டி.ஆர் 1 ரிட்டர்ன் தாள்களில் விடுபட்ட ரத்து செய்யப்பட்ட விலைப்பட்டியல் விவரங்களை பதிவு செய்யுமாறு அவர் வழிநடத்தப்பட்டார். மேலும் அடுத்த மாத GSTR 3B ரிட்டர்ன் தாக்கல் செய்யும் போது விடுபட்ட வரியை வட்டியுடன் வரி செலுத்தி விவரங்கள் பதிவேற்றிட அறிவுறுத்தப்பட்டது.

ஜி.எஸ்.டி.ஆர் 2 ஏ-யில் பிரதிபலிக்காத ஒரு சப்ளையரின் விலைப்பட்டியல் தொடர்பாக ஐ.டி.சி.யைப் பெறுவது குறித்து வரி செலுத்துவோரில் ஒருவர் கேள்வி எழுப்பினார், இதில் அவரது சப்ளையர் ஜி.எஸ்.டி.ஆர் 1 தாக்கல் செய்ததில் அத்தகைய விடுபட்ட விலைப்பட்டியலை பதிவு செய்ததற்கான ஆதாரத்தையும் அவர் வைத்துள்ளார். உரிமைகோரலின் உண்மையான தன்மையை சரிபார்த்த பிறகு, வரி செலுத்துவோர் உள்ளீட்டு வரியை பதிவேற்றிக்கொள்ள அறிவுறுத்தப்பட்டார், அடுத்த மாதம் ஜி.எஸ்.டி.ஆர் 3 பி தாக்கல் செய்யப்படும் வரை அந்த சப்ளையரின் விலைப்பட்டியல் பிரதிபலிக்கவில்லை என்றால், வரி செலுத்துவோர் அடுத்த மாத ஜி.எஸ்.டி.ஆர் 3 பி ரிட்டர்னில் வட்டியுடன் உள்ளீட்டு வரியை செலுத்த வேண்டியிருக்கும் என்று அறிவுறுத்தப்பட்டார். அப்படி ஆலோசனை பெற்றவரின் ஜி.எஸ்.டி.ஆர் 2 ஏ- ரிட்டர்னில், சப்ளையரின் விடுபட்ட விலைப்பட்டியல் விவரங்கள் ஒரு வாரத்தில் பிரதிபலித்தது. எனவே பெறப்பட்ட உள்ளீட்டு வரி அவரின் பயன்பாட்டிலும் எந்த குறைபாடும் எழவில்லை. முன்மொழியப்பட்டுள்ள புதிய ரிட்டர்ன்

தாக்களில் இதுபோன்ற தாமதமாக பதிவேற்றம் செய்யப்படுவதால் அல்லது கணினி HANGOVER பிரச்சினை இருந்தாலும் அத்தகைய உள்ளீட்டு வரியை வரி செலுத்துவோர் அந்த மாதத்தில் உபயோகிக்க இயலாது. விலைப்பட்டியல் விவரங்கள் அடுத்த மாதத்தில் பதிவு ஏற்றம் பெற்ற பின்னரே உள்ளீட்டு வரியை அவரால் உபயோகிக்க இயலும். எனவே அடுத்த மாதம் ரிட்டர்ன் தாக்கல் செய்யும் வரை அவர் காத்திருக்க வேண்டியிருக்கும். தற்பொழுது இந்த புதிய தாக்கீதானது GSTR 2B எனும் படிவத்தில் காண்பிக்கப்பட்டு வரி செலுத்துபவரே நேரடியாக சப்பிளையரை தொடர்பு கொண்டு வரி செலுத்தாத பில்களுக்கு உடன் வரி செலுத்த சொல்லி வற்புறுத்தலாம்.

முக்கியமாக அரசு வரி செலுத்துவோரின் பிரச்சினைகளை உண்ணிப்பாக கவனித்து அவற்றை களையும் போக்கையும் கையாள்கிறது. மேலும் மாண்புமிகு மத்திய நிதி அமைச்சர் திருமதி நிர்மலா சீதாராமன் தனது 1.7.20 மூன்றாவது GST தினத்தன்று வெளியிட்ட வாழ்த்து செய்தியில் ஆத்மநிர்பார் பாரத் உருவாக்க தடைகளை உடைப்பதில் ஜிஎஸ்டி முக்கிய பங்கு வகிக்கிறது என்றும்; ஒரு தேசம், ஒரு வரி, ஒரு சந்தை என்ற குறிக்கோளை முன்வைத்து களத்தில் அலுவலர்கள் உழைக்க வேண்டும் என்று கேட்டுக்கொண்டார். இந்த இக்கட்டான கொரோனா காலகட்டத்தில் அலுவலர்கள் GST பயனீட்டாளர்களுக்கு ஆற்றிய சேவையை வெகுவாக பாராட்டியுள்ளார். வாரிய தலைவர் திரு. அஜித் குமார் அவர்களும் GST தின காணொளி கருத்தரங்கில் மேற்படி பாராட்டை அணைத்து அலுவலர்களுக்கும் தெரிவித்து ஜிஎஸ்டி வரி செலுத்துவோருக்கு உதவுதல் மற்றும் அவர்களின் குறைகளைத் தீர்ப்பது மற்றும் மேதகு நிதி அமைச்சரின் மேற்கோள் படி வணிகத்தை எளிதாக்குவது குறித்தும் அலுவலர்கள் முயல வேண்டும் என்று கேட்டுக்கொண்டார். எனவே சரக்கு மற்றும் சேவை வரி சம்பந்தப்பட்ட நிகழ்வுகளை நாம் கூர்ந்து கவனித்து நம்மை மேம்படுத்தி கொள்வோம். ஜிஎஸ்டி வரி செலுத்துவோருக்கும் அவர்களின் பல்வேறு ஐயங்களை நீக்கி வழி நடத்துவோம்.

**ம. சுப்ரமணியம்**

**கண்காணிப்பாளர் CGST & மத்திய கலால் துறை  
சேலம்**

# கட்டுப்படு

ஆமாம் குழந்தையில் அம்மாக்கும், அப்பாக்கும் கட்டுபட்டோம்,  
பள்ளி, கல்லூரியில் ஆசானுக்கு கட்டுபட்டோம்,  
வளர்ந்தபோது சமூகத்துக்கு கட்டுபட்டோம்,  
பணியில் மேலதிகாரிக்கு கட்டுபட்டோம்,  
இது எல்லாம் வாழ்ந்த வாழ்க்கைக்கு,  
இது எல்லாம் கண்ணுக்கு தெரிந்தவைகளுக்கு,  
இனி ஒரே ஒரு முறை  
கட்டுபடுவோம்,  
இனி வாழப்போகும் வாழ்நாளாக்காக,  
எதற்கு கண்ணுக்கு தெரியாத,  
கண்ணால்  
பார்க்கமுடியாத,  
தொட்டு உணரமுடியாத,  
இருக்கும் இடம்  
தெரியாத  
வாழ்நாள் அறியாத அந்த கொரானாக்காக  
வாய், மூக்குமூடி,  
ஆறு கெஜம் இடைவெளிவிட்டு,  
கை கழுவி, சானிடைசர் போட்டு, உயிர்பாதுகாக்க  
வீட்டினுள் இருந்து, கபசுரகுடிநீர் அருந்தி, சமூக இடைவெளியுடன்,  
இல்லம் இருந்து, அரசு அறிவுறை பேணி மீண்டும் ஒரே ஒரு முறை  
கட்டுப்படுவோம். ஊரடங்குக்கு கட்டுபடுவோம். எதிர்காலம்  
வீட்டுக்குள்ளேயே என்பதை விழிப்புணர்வு செய்வோம்.



**து.வசந்தி**  
கண்காணிப்பாளர்  
சென்னை - செளத்

# வேண்டும் - வேண்டேன்

வளர்ச்சி வேண்டும்; பெரு மலர்ச்சியும் வேண்டும்!  
வனங்களை அழித்து வளர்ச்சியை வேண்டேன்!  
உயர்ச்சி வேண்டும்; அருமுயற்சியும் வேண்டும்!  
அகிலத்தை சிதைத்து அயர்ச்சியை வேண்டேன்!.

நேர்மையும் வேண்டும்; அதில் நியாயமும் வேண்டும்!  
மனங்களை அழிக்கும் வேற்றுமை வேண்டேன்!  
தூய்மையும் வேண்டும்; மிக்க துணிவும் வேண்டும்!  
மதங்களை துதிக்கும் மனங்களை வேண்டேன்!

தலைமை வேண்டும்; அங்கே துணிவும் வேண்டும்!  
சொல்லாடல் கொண்ட வாய் சொல் வேண்டேன்!  
பெருமை வேண்டும்; புது எழுச்சியும் வேண்டும்!  
அல்லாடல் தீண்டும் வாழ்வுதனை வேண்டேன்!

எழுச்சி வேண்டும்; நல்புரட்சியும் வேண்டும்!  
வல்லாடல் ஏற்கும் வெறியாளன் வேண்டேன்!  
எல்லாமும் வேண்டும்; எல்லார்க்கும் வேண்டும்!  
அல்லாரை ஏத்தும் வல்லானை வேண்டேன்!

**து.கிருஷ்ணமூர்த்தி**

கண்காணிப்பாளர்  
தலைமை ஆணையர் அலுவலகம்  
சென்னை மண்டலம்

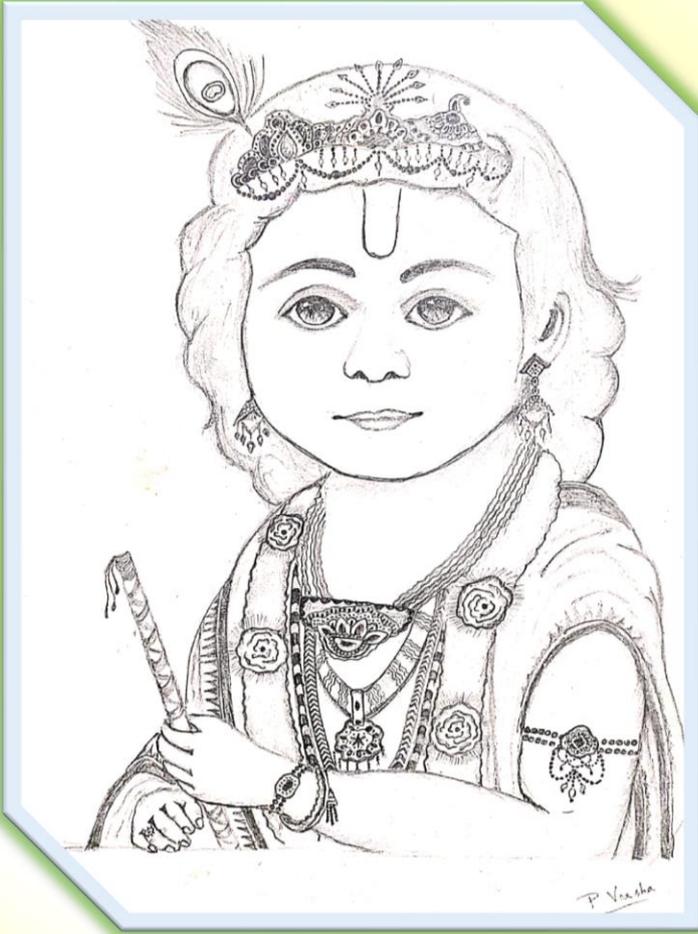


# நம்பிக்கையே மனிதனின் பலம்

வாழ்வில் வென்றவர்கள் சிரிப்பில்  
தெரிவது அசையா தன்னம்பிக்கை!  
தாழ்வில் அவர்கள் வீழ்வதில்லை,  
வீழ்ந்து மடியவும் எண்ணமில்லை!  
நிறைகளை சீராய்ந்து வளர்த்து  
நம்பிக்கையை வேறான்ற செழித்து வாழ்வர்!  
நம்பிக்கை இருந்தால் சோதனைகளையும்  
சாதனைகளாய் மாற்றும் வல்லமை பெறலாம்!  
சிற்பிகளாய் மாற்றலாம்!  
அலாஸ்க்கா ஷோர் பறவை சொல்லும்  
கடந்து வந்த பல்லாயிரம் மைல் தொலைவை!  
புயல் மலை வெயில் குளிர் தாண்டி  
இலக்கை (நியூஸிலாந்து) அடைந்த தன்னம்பிக்கை கதையை!  
அணுகுண்டால் அழிந்த ஜப்பான் உலகுக்கு சொல்லும்,  
தன்னம்பிக்கையிலும் தளராத உழைப்பிலும்  
உலக பொருளாதாரத்தில் தான் அடைந்த சிகரத்தை!  
நம் பாரதம் சொல்லும் கொரோனா அரக்கனை  
தன்னம்பிக்கையோடும் தைரியத்தோடும் எதிர்கொள்ளும்  
நேர்த்தியை!  
துணியையும் நம்பிக்கையும் நம் இரு கண்களாய் போற்றினால்  
தானாய் சேர்ந்திடும் அமைதியும் மகிழ்ச்சியும்!

**ஆர் வாசுதேவன், உதவி ஆணையர்**  
ச ம சே வரி சென்னை மண்டலம்





*P. Varsha*

*D/o - Smt. P. Rukmini  
Senior P.S.  
Pr.CCO, Chennai*



*Humsavarthine C M*

*D/O - Smt. K. Thiruvenkatalakshmi  
Administrative Officer  
Chennai Audit-I Commissionerate*



*M. Sneha*  
*D/o - Shri R. Mohan*  
*Superintendent*  
*Pr.CCO, Chennai*



*Vijayalakshmi Sekar*  
*Administrative Officer*  
*Appeals Commissionerate, Coimbatore*

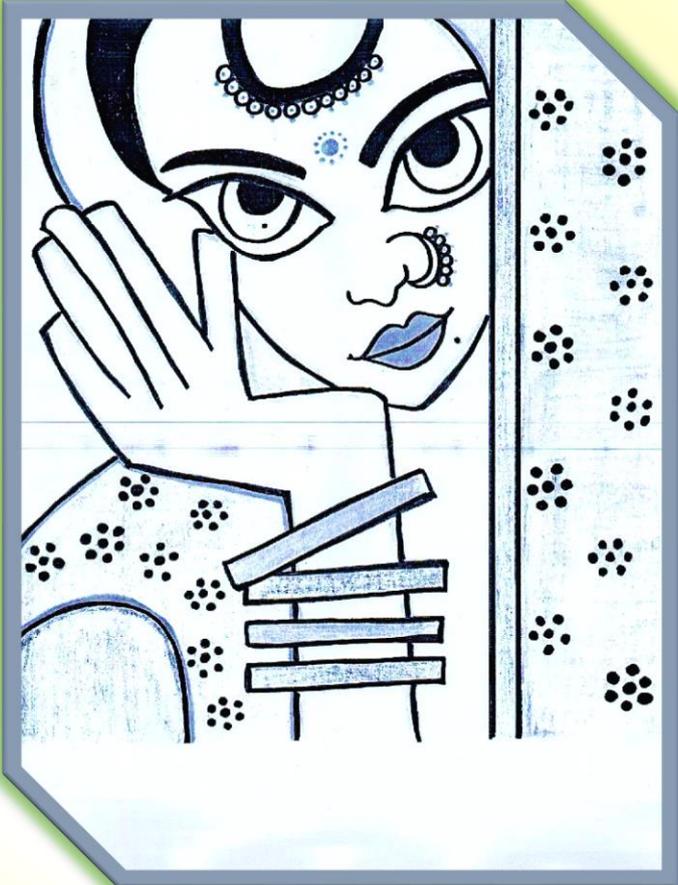


*Sanjeev S.  
S/o - Smt. S. Kavitha  
P.S.  
Chennai Audit - I Commissionerate*



*H. Fazeelathunissa  
D/o - Shri H. Hussain Basha  
Tax Assistant*

*Chennai Appeals - II Commissionerate*



*A. Keerthana*  
*D/o - Smt. A. Kamatchi*  
*Administrative Officer*  
*Chennai Appeals - II Commissionerate*



*V. Deepak Raj*  
*S/o - Shri S. Velu*  
*Head Hawaldar*  
*Puducherry Commissionerate*



*Vasu Kr.  
S/o - Shri Subodh Kumar  
Superintendent  
Tiruchirappalli Commissionerate*



*H. Muhammad Tanveer Shariff  
S/o - Shri A. Hussain Shariff  
Senior Translation Officer  
Chennai North Commissionerate*



*H. Mutharsir Basha  
S/o - Shri H. Hussain Basha  
Tax Assistant  
Chennai Appeals - II Commissionerate*



*H. Suhaila Fathima  
D/o - Shri H. Hussain Basha  
Tax Assistant  
Chennai Appeals - II Commissionerate*



*G. Dhanshika  
D/o Shri Ganesh  
Chennai North Commissionerate*



*G. Santosh  
S/o Shri Ganesh  
Chennai North Commissionerate*

# प्रधान मुख्य आयुक्त कार्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम



गणतंत्र दिवस समारोह 2020 के दौरान परेड का निरीक्षण करते हुए श्री एम. कण्णन, तत्कालीन मुख्य आयुक्त ।



गणतंत्र दिवस समारोह 2020 में उपस्थित अधिकारीगण ।



गणतंत्र दिवस समारोह 2020 के अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए श्री एम. कण्णन, तत्कालीन मुख्य आयुक्त ।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2020 के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए श्री के. एम. रविचंद्रन, आयुक्त ।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2020 में उपस्थित कार्यालय की महिला अधिकारीगण ।

# प्रधान मुख्य आयुक्तालय में हिंदी दिवस समारोह 2019



हिंदी दिवस समारोह 2019 के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए तत्कालीन प्रधान मुख्य आयुक्त श्री एम. अजित कुमार ।



हिंदी दिवस समारोह 2019 के दौरान सभा को संबोधित करते हुए तत्कालीन प्रधान मुख्य आयुक्त, श्री एम. अजित कुमार ।



हिंदी दिवस समारोह 2019 के दौरान सुश्री पी. हेमावती, तत्कालीन प्रधान आयुक्त, चेन्नई उत्तर आयुक्तालय, डॉ. पी. के. शर्मा, कुल सचिव, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास एवं श्री एम. अजित कुमार, तत्कालीन प्रधान मुख्य आयुक्त विभागीय पत्रिका "दक्षिण दर्पण" का विमोचन करते हुए ।



हिंदी दिवस समारोह 2019 के दौरान सभा को संबोधित करते हुए तत्कालीन प्रधान आयुक्त, सुश्री पी. हेमावती ।



कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ।